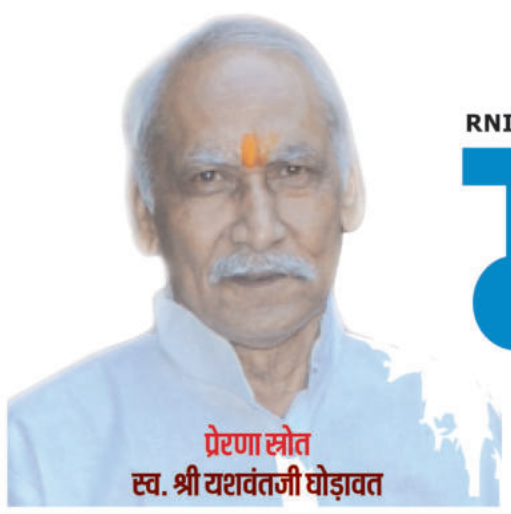

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ..सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

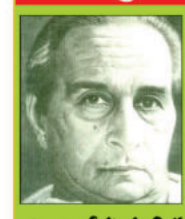

मित्रता की सच्ची परीक्षा संकट में नहीं उत्कर्ष में होती है, जो मित्र के उत्कर्ष को बर्दास्त कर सके वही सच्चा मित्र है।

हरिशंकर परसाई

वर्ष-06, अंक - 11 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 07 दिसम्बर 2023 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

कांग्रेस नेता ने की विजयवर्गीय के लिए पैरवी

इंदौर। मध्य प्रदेश का नया मुख्यमंत्री कौन होगा, इस पर सस्पेंस बरकरार है। शिवराज सिंह चौहान, नरेंद्र सिंह तोमर, प्रह्लाद पटेल समेत कई नेताओं के नामों पर अटकलों का दौर चल रहा है। इस बीच कांग्रेस के एक नेता ने कैलाश विजयवर्गीय के लिए पैरवी की है। इंदौर में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा है कि, विजयवर्गीय को मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया जाए। उनकी दलील है कि इससे इंदौर का विकास होगा। भाजपा ने इंदौर की सभी 9 सीटों पर जीत हासिल की है।

इंदौर के कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व नगर अध्यक्ष प्रमोद टंडन ने खुलकर यह इच्छा जाहिर की है कि वह विजयवर्गीय को सीएम देखना चाहते हैं। उन्होंने ऐसा इंदौर की विकास के लिए कहा। मीडिया से बातचीत करते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रमोद टंडन ने कहा, मैं इंदौर की लड़ाई लड़ने की बात कर रहा हूं। न मेरी केलैश से बात हुई है और न आगे होगी। इंदौर को मुख्यमंत्री नहीं मिला है। मैं तो कांग्रेस से भी कह रहा हूं कि मुख्यमंत्रियों ने इंदौर का दोहन किया और भाजपा के मुख्यमंत्रियों ने भी इंदौर की अनदेखी की है। यदि इंदौर का मुख्यमंत्री बनेगा तो यह विकास की नई परिभाषा गढ़ेगा। कैलाश जी सबसे वरिष्ठ हैं। कैलाश जी मुख्यमंत्री की रेस में है और वह बनते हैं तो इंदौर कि लिए शुभ संकेत होगा।

हार के बाद पहला ऐक्शन कांग्रेस में

भोपाल।

विधानसभा चुनावों में पार्टी की करारी हार के बाद मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने दिल्ली में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी से मुलाकात की। सूत्र अनुसार, दिल्ली के कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर एक बैठक हुई। बैठक में एआईसीसी महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल भी मौजूद रहे। बैठक के बाद हाईकमान ने मध्य प्रदेश में नए अध्यक्ष की नियुक्ति के लिए कमलनाथ को निर्देश दिए हैं।

विधायकों की बैठक ली

इससे पहले कमलनाथ ने भोपाल स्थित पार्टी कार्यालय में जीतने वाले नवनिर्वाचित विधायकों और हारने वाले कांग्रेस उम्मीदवारों के साथ एक बैठक की। कमलनाथ ने बैठक में पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि, विधानसभा चुनावों में हार से निराश होने की जरूरत नहीं है। सभी को लोकसभा चुनाव की तैयारियों पर ध्यान देने की जरूरत है। अब हमें केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए चार महीने बाद होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए पूरे दिल से काम करने में जुट जाना चाहिए।

लोकसभा चुनाव में जुटने की अपील

मध्य प्रदेश पार्टी प्रमुख कमलनाथ ने कहा कि भले ही हम यह चुनाव हार गए हैं, लेकिन हमें इसको भूलकर 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की जीत के लिए ईमानदारी से जुट जाना चाहिए। कमलनाथ ने पार्टी के नवनिर्वाचित विधायकों और हारे उम्मीदवारों से 10 दिनों में हार के कारणों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। उन्होंने यह भी ऐलान किया कि लोकसभा चुनाव से पहले वह पूरे राज्य का दौरा करेंगे।

बैठक लेने के बाद दिल्ली पहुंचने पर फरमान

पार्टी विधायकों और उम्मीदवारों के साथ बैठक के बाद कमलनाथ दिल्ली के लिए रवाना हुए। उन्होंने दिल्ली में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी से मुलाकात की। समाचार एजेंसी के अनुसार, दिल्ली में खरगे के आवास पर एक बैठक हुई जिसमें एआईसीसी महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल भी शामिल हुए। बैठक के बाद हाईकमान ने मध्य प्रदेश में नए अध्यक्ष की नियुक्ति के लिए कमलनाथ को निर्देश दिए हैं।

विधानसभा चुनाव जीतकर आए भाजपा के 10 सांसदों ने छोड़ी संसद सदस्यता

नई दिल्ली।

पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद भाजपा ने बुधवार को बड़ा फैसला लिया है। चुनाव में जो सांसद जीतकर आए हैं, उन्होंने संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। बुधवार को ऐसे 10 सांसदों ने इस्तीफा सौंप दिया है। इसके अलावा राजस्थान से विधानसभा चुनाव जीते भाजपा सांसद बाबा बालकनाथ रोहतक में हैं तो वह लौटकर इस्तीफा दे सकते हैं। ऐसे ही छत्तीसगढ़ से जीतकर आईं रेणुका सिंह भी किसी मेडिकल इमरजेंसी की वजह से फिलहाल घर पर हैं, वह भी बाद में इस्तीफा दे सकती हैं।

भाजपा ने तीन राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार बनाई है। जबकि तेलंगाना में आठ सीटें जीती हैं। भाजपा ने चार राज्यों में विधानसभा चुनाव में 21 सांसदों को टिकट दिया था। राजस्थान और मध्य प्रदेश में सात-सात सांसदों को चुनाव लड़ाया था। वहीं, छत्तीसगढ़ में चार और तेलंगाना में तीन सांसदों को विधानसभा में टिकट दिया था।

अब भाजपा हाईकमान ने विधानसभा चुनाव जीते हुए सांसदों से मुलाकात की और संसद सदस्यता छोड़ने का फैसला लिया। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ सभी सदस्य इस्तीफा देने के लिए स्पीकर से मिलने पहुंचे।

मोदी कैबिनेट में कम हो जाएंगे तीन मंत्री

इस्तीफा देने वालों में प्रहलाद पटेल और नरेंद्र तोमर केंद्रीय मंत्री हैं। वहीं, छत्तीसगढ़ से सांसद और केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह भी इस्तीफा देंगी। इस तरह, केंद्रीय कैबिनेट में तीन मंत्री कम हो जाएंगे। इसके अलावा, राजस्थान के सांसद बाबा बालकनाथ भी इस्तीफा देंगे। इस्तीफा देने वाले सांसदों की संख्या 12 बताई गई है।

हज और उमरा की यात्रा भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए और भी सुविधाजनक

नई दिल्ली, एजेंसी। मक्का की यात्रा करने वाले भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए सऊदी अरब अधिक सुविधाएं प्रदान कर रही है। सऊदी के हज और उमरा मंत्री तौफिग बिन फौजान अल-रबिया ने बुधवार को बताया कि ये पहल विशेष रूप से भारतीय तीर्थयात्रियों के यात्रा को और आरामदायक बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। इससे विशेष रूप से स्वतंत्र उमरा यात्राओं पर जाने वाली महिलाओं को लाभ होगा। उमरा वीजा को 90 दिनों तक बढ़ाने के साथ 4 दिन के ट्रांजिट वीजा को भी शुरू किया जा रहा है।

समाचार एजेंसी से बात करते हुए अल-रबिया ने कहा, लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर इसका उद्देश्य सभी यात्रियों के लिए अधिक पूर्ण और सुरक्षित तीर्थयात्रा अनुभव सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि हज और उमरा मंत्री के रूप में भारत की मेरी पहली आधिकारिक यात्रा उमरा कलाकारों और आगंतुकों की सेवा के लिए सऊदी अरब की अटूट प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करने के हमारे चल रहे प्रयासों में महत्वपूर्ण है। भारत के दौरे पर आए अल-रबिया ने केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री स्मृति ईरानी और विदेश मंत्री एस जयशंकर से बातचीत की। दुनिया भर से लाखों मुसलमान हज के साथ-साथ इस्लामी तीर्थयात्रा उमरा करने के लिए हर वर्ष मक्का जाते हैं। तीर्थयात्रियों के अनुभवों को बढ़ाने के लिए शुरू की गई प्रभावशाली पहल के मद्देनजर निकट भविष्य में भारतीय उमरा तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि कर सकती है।

मंत्री ने भारत-सऊदी अरब संबंधों में सुधार के बारे में भी बात की। बता दें कि अल-रबिया ने कहा कि, 2024 में हज सीजन के लिए भारत को एक लाख 75 हजार 25 तीर्थयात्रियों का अनुमानित कोटा आवंटित किया गया है।

कश्मीरी पंडितों को आरक्षित सीटें और जम्मू का बढ़ेगा कोटा

नई दिल्ली।

लोकसभा में जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन संशोधन विधेयक और आरक्षण संशोधन विधेयक पास हो गया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इसे पेश किया था। उन्होंने इस पर भाषण देते हुए बताया कि, इन विधेयकों को मंजूरी मिलने से जम्मू-कश्मीर की विधानसभा में विस्थापित कश्मीरी पंडितों को आरक्षण मिलेगा। तीन सीटों पर विधायक मनोनीत होंगे। दो सीटें विस्थापित कश्मीरी पंडितों के लिए होंगी और एक सीट पीओके से आए विस्थापितों के लिए होगी। कश्मीरी पंडितों के लिए तय दो सीटों में से एक महिला के लिए होगी।

अमित शाह इस दौरान आक्रामक अंदाज में नजर आए। उन्होंने कहा कि, कश्मीर में जब आतंकवाद चालू हुआ तो किसी ने आज तक कुछ नहीं किया था। लेकिन उन पीड़ितों के लिए आज पीएम नरेंद्र मोदी ने न्याय करने की कोशिश की है। उन लोगों की पीड़ा की हम कल्पना नहीं कर सकते, जिनका कश्मीर से पलायन हुआ और करोड़ों की संपत्ति छोड़कर वे बेंगलुरु, दिल्ली और हैदराबाद तक जाकर बसे। उनकी संपत्तियों पर कब्जे हो गए। इसे छुड़ाने के लिए हमने कानून बनाया ताकि उन्हें वापस अपनी संपत्ति मिल सके। विधानसभा में आरक्षण की जानकारी देते हुए अमित शाह ने कहा कि जम्मू में पहले 37 सीटें थीं और अब उन्हें बढ़ाकर 43 कर दिया है।

जम्मू की बढ़ गईं सीटें, पंडितों के लिए आरक्षण लागू

इसके अलावा कश्मीर में पहले 46 थीं, जो अब 47 हो गई हैं। इसके अलावा पीओके की 24 सीटों को भी आरक्षित रखा गया है। अमित शाह ने कहा कि यह सब इसलिए हो सका है कि हमने आर्टिकल 370 को हटा दिया। अमित शाह ने कहा कि कई लोगों ने पूछा कि विस्थापितों को आरक्षण देने से क्या होगा...? उन्होंने कहा कि इससे उनकी आवाज सुनी जाएगी और वे विधानसभा में अपनी बात रख सकेंगे। अमित शाह ने कहा कि सीटों का यह परिसीमन आबादी और क्षेत्र के आधार पर होगा। अब जम्मू-कश्मीर विधानसभा में कुल सीटें 114 होंगी, इनमें से 90 पर चुनाव होगा। अन्य 24 सीटें पीओके के लिए होंगी।

बढ़ रही मुस्लिम आबादी, संसद में उठी एनआरसी लागू करने की मांग

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र की सत्ताधारी भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे ने बुधवार को संसद में एक बार फिर से राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) का मुद्दा उठाया। सरकार से इसे जल्द लागू करने का आग्रह किया। दुबे ने झारखंड के कुछ इलाकों में जनसंख्या का संतुलन बिगड़ने का दावा किया और सरकार से आग्रह किया कि एनआरसी लागू की जाए ताकि बांग्लादेशी घुसपैठियों को बाहर किया जा सके।

दुबे ने कहा, बांग्लादेशी घुसपैठिये आते हैं और आदिवासी महिलाओं से शादी करते हैं। वहां उनकी आबादी लगातार बढ़ रही है। यह हिंदू और मुसलमान का विषय नहीं है। सांसद ने दावा किया, ममता बनर्जी जब सांसद थीं तो उन्होंने संसद में कम से कम 10 बार कहा था कि बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण पूरे बंगाल में जनसंख्या का अनुपात बदल रहा है। लेकिन जबसे वह मुख्यमंत्री बनी हैं तब से बांग्लादेशी घुसपैठियों की आबादी लगातार बढ़ रही है।

झारखंड के गोड्डा से सांसद ने कहा, मैं बतौर सांसद 15 वर्ष में 100वीं बार यह मुद्दा उठा रहा हूं। हम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बारे में बात करते हैं। मेरा राज्य झारखंड आदिवासी बहुल राज्य के रूप में बिहार से अलग हो गया था। 1951 में, झारखंड में आदिवासियों की आबादी 36 प्रतिशत थी। आज यह केवल 24 प्रतिशत है। दुबे ने कहा, नतीजा यह है कि पूरे देश में परिसीमन हो रहा है लेकिन झारखंड में2008 में परिसीमन नहीं किया जा सका क्योंकि इससे लोकसभा में एक आदिवासी सीट और विधानसभा में तीन आदिवासी सीटें कम हो जाएंगी।

खेत-खेत में यूरिया: झाबुआ जिले में भूरिया....

माही की गूंज, संजय भटेवरा।

झाबुआ। समोसे में आलू व बिहार में लालू वाली कहावत पुरानी हो गई है 2023 के मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद झाबुआ जिले की तीनों सीट पर भूरिया सरनेम की जीत के बाद लोग नई कहावत बना रहे हैं कि, खेत-खेत में यूरिया और झाबुआ जिले में भूरिया। जिले के संदर्भ में देखे तो आजादी के बाद से इस सीट पर भूरिया का वर्चस्व लंबे समय रहा है। यहां के छोटे से गांव माछलिया में जन्म लेकर वरिष्ठ नेता स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया ने राष्ट्रीय राजनीति में अपनी छाप छोड़ी और वे राष्ट्रीय अजा-अजजा आयोग के अध्यक्ष भी रहे, यही नहीं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ मंचों पर अपने भाषणों से कई लोगों को प्रभावित भी किया, पहले कांग्रेस और फिर भाजपा से वे कई पदों पर रहे। इसी तरह जिले के ही अन्य छोटे से गांव मोरडूड़िया से निकलकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कांतिलाल भूरिया ने भी देश और प्रदेश में अपनी अलग पहचान बनाई, वे भी मनमोहन सिंह सरकार में केंद्रीय मंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष तक पहुंचकर जिले का नाम रोशन किया। इसी कड़ी में दिलीप सिंह भूरिया की विरासत को उनकी बेटी निर्मला भूरिया तथा कांग्रेस के कांतिलाल भूरिया की विरासत को उनके बेटे विक्रांत भूरिया आगे ले जा रहे हैं। विधानसभा चुनाव में दोनों ने जीत दर्ज की है और भाजपा की सरकार बनने से पांचवीं बार की विधायक निर्मला भूरिया का प्रदेश सरकार में मंत्री पद के लिए भी दावेदारी मजबूत है। यही नहीं जिले की तीनों विधानसभा सीट से भूरिया के विजयी होने से खेत-खेत में यूरिया और झाबुआ जिले में भूरिया यह कहावत सही चरितार्थ हो रही है।

निर्मला भूरिया, विक्रांत भूरिया विरसिंग भूरिया।

दोनों दलों से दो-दो भूरिया

जिले के तीन सीटों पर हुए चुनाव में भाजपा ने पेटलावद से निर्मला भूरिया, झाबुआ से भानु भुरिया तथा कांग्रेस ने झाबुआ से विक्रांत भूरिया व थांदला से वीरसिंह भूरिया को चुनाव में टिकट दिया था। इसमें कांग्रेस के दोनों भूरिया चुनाव जीत गए। वहीं भाजपा से भी 1 भूरिया ने जीत दर्ज की और अब तीनों विधानसभा सीट पर भूरिया ही विधायक है।

कलसिंह भाभर वर्सेस वीरसिंह भूरिया, क्यों जीते भूरिया ?

माही की गूंज ने मतदान के पश्चात अपने विश्लेषण में स्पष्ट लिखा था कि, टिकट वितरण के समय थांदला की सीट को कांग्रेस के लिए सबसे सुरक्षित सीट माना जा रहा था लेकिन चुनाव प्रचार में अच्छी मेहनत करके कलसिंह भाभर ने अपने आप को मुकाबले में लाकर खड़ा कर दिया है और दोनों के बीच नजदीकी मुकाबला होगा और कोई भी जीत सकता है। परिणामों ने माही की गूंज के विश्लेषण को सही साबित किया और बहुत ही नजदीकी मुकाबले में कांग्रेस ने जीत दर्ज की। लेकिन यह जीत वास्तव में कांग्रेस की नहीं है बल्कि वीरसिंह भूरिया की व्यक्तिगत छवि की जीत है, उनकी सादगी और व्यवहार की जीत है। वही यह हार भारतीय जनता पार्टी की हार नहीं है बल्कि यह कलसिंह भाभर की व्यक्तिगत हार है, उनके बडबोलेपन की हार है, उनके 5 वर्ष तक किए गए कर्मों की हार है। जिला पंचायत चुनाव में पांच में से एक सीट भी न जीता सकना कलसिंह भाभर की सबसे बड़ी कमजोरी थी। यही नहीं समय-समय पर उनके द्वारा दिए गए कटू बयान भी उनकी हार का मुख्य कारण रहा है। उनकी हार के बाद भाजपा कार्यकर्ता स्वयं यह कह रहे कि, कलसिंह भाभर ने जो 5 साल तक बोया है उसी को चुनाव में काटा है। वही वीरसिंह भूरिया ने सहज व सरल तरीके से विनम्रता के साथ चुनाव लड़ा और उनकी विनम्रता कलसिंह के बडबोलेपन के साथ ही भाजपा सरकार की योजनाओं पर भी भारी पड़ी।

निर्मला वर्सेस वालसिंह, क्यों जीती निर्मला ?

निर्मला भूरिया की छवि भी शांत व सरल नेता की रही है, उनके बारे में यही कहा जाता है कि, उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं किया और विवादों से हमेशा ही दूर रहने वाले नेता की छवि है। चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने लाडली बहना योजना और शिवराज सरकार की योजनाओं को आगे रखा वहीं वालसिंह मैडा की आक्रामक छवि उनकी हार का कारण बनी, यही नहीं जिला पंचायत चुनाव में परिवारवाद को बढ़ावा देना भी एक मुख्य कारण रहा है कि मतदाता उनसे दूर हुए। पेटलावाद विधानसभा को इंदौर और रतलाम से जुड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता है और इंदौर और रतलाम में चली भाजपा की सुनामी का असर भी पेटलावद विधानसभा में देखा गया। यहां भाजपा के पक्ष में प्रचार के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री भी आए थे जिसका लाभ भी भाजपा प्रत्याशी को मिला।

विक्रांत वर्सेस भानु , क्यों हारे भानु ?

जिला मुख्यालय की इस सीट पर प्रचार के लिए स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अंतिम क्षणों में आए थे और उन्होंने गारंटी दी थी लेकिन बावजूद इसके भाजपा प्रत्याशी की हार कहीं न कहीं पार्टी से ज्यादा व्यक्तिगत हार रही है। चुनाव में सबसे पहली लिस्ट में प्रत्याशी घोषित के बावजूद भानु और असन्तुष्टो को साथ नहीं ले पाए ओर भाजपा जिला अध्यक्ष होने के बावजूद सभी में सामंजस्य नहीं बैठा पाए। यही नहीं माफियाओं से घिरे रहने के आरोप भी लगते रहे। वहीं कांग्रेस प्रत्याशी विक्रांत भूरिया, यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहते हुए किए गए संघर्ष और लोगों के बीच स्वच्छ छवि, पिता की राजनीतिक विरासत का हवाला व हर सुख-दुख में साथ देने के वादे से जनता के बीच लोकप्रिय रहे हैं और यह लोकप्रियता वोटो में भी तब्दील हुई। यही नहीं इस सीट पर गुंडाः बनाम डॉक्टर का नारा भी खूब चला। इस चुनाव में एक बात और देखने को मिली की जनता व्यक्तिगत हमले को ज्यादा तहरीज नहीं देती है। भानु भूरिया ने असली आदिवासी बनाम नकली आदिवासी का मुद्दा भी उछाला जिसे जनता ने सिरे से नकार दिया। बुद्धिजीवियों का कहना है कि, जनता मुद्दे को महत्व देती है। प्रदेश सरकार की इतनी योजनाओं को प्रदेश में भाजपा की सुनामी के बाद भी भाजपा प्रत्याशी ने सरकार की उपलब्धियों की बजाय व्यक्तिगत हमले को प्राथमिकता दी, जिस पर विक्रांत ने कड़ी प्रतिकिया दी और गुंडाः बनाम डॉक्टर का मुद्दा उछाला और परिणाम सबके सामने है। यहां प्रधानमंत्री मोदी का मैजिक, शिवराज की लाडली बहना और अन्य नेताओं के प्रचार के बावजूद भानु भूरिया को बड़ी शिकस्त मिली।

अब आगे क्या..?

प्रदेश में निश्चित रूप से कांग्रेस की बड़ी पराजय के बाद जिले के दोनों कांग्रेसी विधायक अब केवल विपक्षी विधायक बन कर सदन में अपनी बात रख सकेंगे। अपने शांत छवि से वीरसिंह भूरिया व अपनी आक्रामक शैली से विक्रांत भूरिया सरकार के खिलाफ आवाज उठाएंगे। वहीं भाजपा सरकार में वरिष्ठ विधायक, महिला विधायक और अजजा वर्ग की विधायक होने के कारण मंत्री पद के लिए निर्मला भूरिया का दावा मजबूत रहेगा और हो सकता है कि, उन्हें सरकार में मंत्री पद भी मिल जाए।

2023 में जीते विधायकों की साक्षरता, आर्थिक व अपराधिक स्थिति

सबसे करोड़पति चेतन्य कश्यप तो तिसरे नंबर पर है कमलनाथ

भोपाल एजेंसी।

मध्य प्रदेश चुनाव के नतीजो में 230 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा को सबसे ज्यादा 163 सीटें मिलीं हैं। इसके साथ राज्य में भाजपा सरकार बनना तय हो गया है। वहीं, कांग्रेस के खाते में 66 सीटें गई हैं। एक सीट भारत आदिवासी पार्टी के खाते में गई है। चुनाव जीतने वाले सभी 230 उम्मीद्वारों के हलफनामे का विश्लेषण एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म (एडीआर) ने किया है।

एडीआर के मुताबिक 230 में से 90 (39 फीसदी) नव निर्वाचित विधायकों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले दर्ज होने की जानकारी दी है। 2018 के मुकाबले दागी उम्मीद्वारों की संख्या में कमी आई है। 2018 में जीते उम्मीद्वारों में से 94 पर आपराधिक मामले दर्ज थे। गंभीर धाराओं में मामले दर्ज होने की बात करें तो 90 में से 34 नवनिर्वाचित विधायकों पर गंभीर धाराओं में मुकदमे चल रहे हैं। 2018 के विजेताओं में इस तरह के 47 उम्मीद्वार थे।

नई विधानसभा के 89 फीसदी (कुल 205) सदस्य करोड़पति होंगे। प्रत्येक विजेता उम्मीद्वार की औसत संपत्ति 11.77 करोड़ रुपये है। करोड़पति विजेताओं की संख्या में इजाफा हुआ है। 2018 में जीते 90 में से 68 (76 फीसदी) उम्मीद्वार करोड़पति थे। जो अब बढ़कर 72 (80 फीसदी) हो गए हैं। करोड़पति उम्मीद्वारों के जीतने का प्रतिशत 2018 के मुकाबले बढ़ा है। 2018 में 81 फीसदी विजेता करोड़पति थे, जो अब बढ़कर 89 फीसदी हो गए हैं।

किस पार्टी से कितने दागी जीते...?

भाजपा के 163 नवनिर्वाचित विधायकों में से 51 पर (31 फीसदी) आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं। इसी तरह कांग्रेस के 66 नवनिर्वाचित विधायकों में से 38 (58 फीसदी) पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। भारत आदिवासी पार्टी के विधायक पर भी आपराधिक मामला दर्ज है। भाजपा के 16 तो कांग्रेस के 17 नवनिर्वाचित विधायकों ने खुद पर गंभीर धाराओं में आपराधिक मामले दर्ज होने की जानकारी दी है। भारत आदिवासी पार्टी के विधायक पर भी गंभीर धाराओं में मामला दर्ज है।

किस पार्टी से कितने करोड़पति जीते...?

नई विधानसभा के 205 नवनिर्वाचित विधायक करोड़पति हैं। भाजपा के 163 विधायकों में से करोड़पति विधायकों की संख्या 144 (82 फीसदी) है। वहीं, कांग्रेस के 92 फीसदी नवनिर्वाचित विधायक करोड़पति हैं। पार्टी के 66 विजेताओं में करोड़पतियों की संख्या 61 है। कांग्रेस के सिर्फ पांच विजेता ऐसे हैं जिनके पास एक करोड़ रुपये से कम की संपत्ति है। 44 फीसदी यानी 102 विजेता उम्मीद्वारों ने अपने पास पांच करोड़ से ज्यादा की संपत्ति घोषित की है। 71 (31 फीसदी) विजेता उम्मीद्वारों के पास दो से पांच करोड़ रुपये की संपत्ति है। 48 (21 फीसदी) विजेताओं के पास 50 लाख से दो करोड़ रुपये तक की संपत्ति है। महज नौ विजेता उम्मीद्वार ऐसे हैं जिनके पास 50 लाख रुपये से भी कम की संपत्ति है।

सबसे अमीर नवनिर्वाचित विधायक कौन हैं...?

रतलाम शहर विधानसभा सीट से भाजपा के टिकट पर जीते चैतन्य कश्यप नई विधानसभा के सबसे अमीर विधायक होंगे। चैतन्य 2018 में भी जीते थे। तब वह दूसरे सबसे अमीर विजेता थे। चैतन्य ने इस बार अपनी कुल संपत्ति 296.08 करोड़ रुपये बताई है। पिछली विधानसभा में सबसे अमीर विधायक रहे संजय पाठक नई विधानसभा के दूसरे सबसे अमीर विधायक होंगे। कटनी जिले की विजयराघवगढ़ सीट से भाजपा के टिकट पर जीते पाठक के पास 142.09 करोड़ रुपये की संपत्ति है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ नई विधानसभा के तीसरे सबसे अमीर विधायक होंगे। छिंदवाड़ा सीट से जीते कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के पास 134.24 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति है। इन तीन नवनिर्वाचित विधायकों के अलावा किसी अन्य विधायक के पास 100 करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्ति नहीं है।

किन विजेताओं के पास सबसे कम सपत्ति...?

रतलाम जिले की सैलाना सीट से भारत आदिवासी पार्टी के टिकट पर जीते कमलेश्वर डोडियार नई विधानसभा के सबसे कम संपत्ति वाले विधायक होंगे। कमलेश्वर के पास कुल 18.32 लाख की संपत्ति है। जबलपुर जिले की सिहोरा सीट से जीते भाजपा के संतोष वरकड़े और खंडवा से जीते भाजपा की ही कंचन तनवे इस सूची में दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं। संतोष के पास कुल 25.83 लाख तो कंचन के पास 26.93 लाख रुपये की कुल संपत्ति है।

कितने पढ़े-लिखे हैं मध्य प्रदेश के नवनिर्वाचित विधायक...?

64 (28 फीसदी) विजेताओं ने अपनी-अपनी शैक्षिक योग्यता 5वीं से 12वीं के बीच है। वहीं, 161 (70 फीसदी) विजेता ऐसे हैं जो स्नातक या उससे अधिक पढ़े-लिखे हैं। दो विजेता सिर्फ साक्षर हैं, वहीं तीन डिप्लोमाधारी हैं। दो विजेता 5वीं पास हैं। पांच ने 8वीं तक की पढ़ाई की है। 14 विजेता ऐसे हैं जिन्होंने ने 10वीं तक की शिक्षा ली है। इसी तरह 43 ने 12वीं, 49 ने स्नातक, 35 ने पेशेवर स्नातक और 70 ने परास्नातक की डिग्री ली है। सात विजेताओं ने पीएचडी कर रखी है।

पार्टी वार बात करें तो भाजपा के 163 विजेताओं में एक साक्षर, दो 5वीं पास, चार 8वीं पास, 10 विजेता 10वीं पास और 31 विजेता 12वीं पास हैं। इसी तरह 38 के पास स्नातक, 24 के पास स्नातक पेशेवर, 47 के पास स्नाकोत्तर डिग्री है। चार ने पीएचडी और दो ने डिप्लोमा किया है।

कांग्रेस के 66 विजेताओं में से एक साक्षर, एक आठवीं पास, चार 10वीं पास और 12 विजेता 12वीं पास हैं। 11 विजेताओं ने स्नातक, 10 ने पेशेवर स्नातक और 23 ने स्नाकोत्तर किया है। तीन विजेताओं ने पीएचडी और एक ने डिप्लोमा कर रखा है।

कितनी उम्रदराज होगी नई विधानसभा...?

18 नवनिर्वाचित विधायक 31 से 40 वर्ष की उम्र के हैं। 53 नवनिर्वाचित विधायकों की उम्र 41 से 50 साल के बीच है। वहीं, 86 की उम्र 51 से 60 तो 57 की उम्र 61 से 70 साल के बीच है। 16 सबसे उम्रदराज विधायकों की उम्र 71 से 80 साल के बीच है। टिमरनी सीट से कांग्रेस के टिकट पर जीते अभिजीत शाह नई विधानसभा के सबसे युवा विधायक होंगे। 31 साल के अभिजीत ने यहां अपने चाचा और भाजपा के कद्दावर नेता संजय शाह को महज 950 वोट से हराया। चाचौड़ा विधानसभा सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह को हराने वाले प्रियंका पेंची नई विधानसभा की दूसरी सबसे युवा विधायक होंगी। प्रियंका की उम्र महज 32 साल है। शहडोल जिले की ब्योहारी सीट पर भाजपा के टिकट पर जीते शरद जुगल कोल भी तीन सबसे युवा विधायकों में शामिल होंगे। शरद की उम्र भी 32 साल है।

सबसे उम्रदराज विधायकों की बात करें तो दो सबसे उम्रदराज विधायकों की उम्र और नाम दोनों एक ही है। दोनों 80 साल के हैं। दोनों भाजपा के टिकट पर जीते हैं। एक रीवा की गुढ़ सीट से जीते नागेंद्र सिंह और दूसरे सतना की नागौद सीट से जीते नागेंद्र सिंह हैं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ नई विधानसभा के तीसरे सबसे उम्रदराज विधायक होंगे। 76 साल के कमलनाथ अपनी परंपरागत छिंदवाड़ा सीट से जीते हैं। दमोह सीट से भाजपा के टिकट पर जीते पूर्व वित्तमंत्री जयंत मलैया भी 76 साल के हैं। 75 साल या उससे अधिक उम्र के नवनिर्वाचित विधायकों की लिस्ट में एक और नाम जगन्नाथ सिंह रघुवंशी का है। रघुवंशी अशोकनगर जिले की चंदेरी सीट से भाजपा के टिकट पर जीते हैं। 230 नवनिर्वाचित विधायकों में से 203 पुरुष और 27 (12 फीसदी) महिलाएं हैं।

भुरिया की जीत पर कांग्रेस ने निकाला विजय जूलुस

माही की गूंज, थांदला।

विधानसभा चुनाव मे विजय के पश्चात वीरसिंह भूरीया का भव्य विजय जूलुस नगर मे निकाला गया। कांग्रेस के जीत से उत्साहित कार्यकर्ताओ ने दशहरा मैदान मे एकत्रित होकर विधायक वीरसिंह भूरीया ने जुलुस के रूप् मे आभार रैली निकाली। रैली मे कांग्रेस नेता खुली जीप मे क्षैत्र की जनता का आभार व्यक्त करते चल रहे थे। वही कार्यकर्ता बेड व डीजे की धून पर नाचते गाते आतिशबाजी कर चल रहे थे। रैली नगर के प्रमुख चौराहो से होती हूई बायपास चौराहे पर सभा के रूप मे परिवर्तित हुई। जहॉ पर कार्यकर्ता को संबोधित करते हुए विधायक भूरीया ने जीत का श्रैय कार्यकर्ताओ देते हुए कहा कि, कांग्रेस का कार्यकर्ता जिस मजबूती के साथ मैदान मे डटा रहा उसका परिणाम है की हम विधानसभा मे जीते है। भाजपा ने कांग्रेस को हराने के लिये मजदूर के रूप मे एक निर्दलीय को खडा करा था, किन्तु भाजपा भी हार गई और उसकी जमानत जप्त हो गई। भूरीया ने कार्यकर्ता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि, जिस मजबूती से हमने विधानसभा चुनाव जीता है, उसी तरह से हमको आने वाले लोकसभा चुनाव भी जीतना है और कांग्रेस कार्यकर्ता के हर सुख-दुख में कांग्रेस पार्टी और मै हमेशा उनके साथ खडा हूँ किसी को डरने व हतास होने की आवश्यकता नही है। सभा को जिला संगठन मंत्री जसवंतसिंह भाबर, जिला पंचातय अध्यक्ष सोनल भाबर, ब्लाक अध्यक्ष गेदाल डामोर, जिला युवक कांग्रेस अध्यक्ष विनय भाबर, चेनसिंह डामोर, राजेश डामोर, रायसिह सेहलोत, फतेसिह नायक ने भी संबोधित करते हुए कार्यकर्ताओ का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कांग्रेस नेता गुरूप्रसाद अरोरा, पारसिह डिडोर, कालुसिंह नलवाया, जितेन्द्र धामन, गुलाम कादर, सुधीर भाबर, हरीष पंचाल, वीरेन्द्र बारीया, तन्मय पाठक, कादर शेख, मोइनुददीन कल्लु,संदीप डामोर, अरूण ओहारी, रोशन बारीया आदि उपस्थित थे। संचालन अक्षय भट्ट व आभार आनंद चौहान ने व्यक्त किया।

तीनों राज्यों में सरकार बनने पर भाजपा ने मनाया जीत का जश्न

माही की गूंज, थांदला। भाजपा की तीनों राज्यों सरकार बनने पर थांदला में जश्न का माहौल पूर्व विधायक कलसिंह भाबर और कार्यकर्ताओं ने गुलाल और पटाखे छोड़कर जश्न मनाया। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बीजेपी को धमाकेदार व शानदार जीत मिलने पर जीत के इस मौके पर भाजपा के पूर्व विधायक कलसिंह भाबर ने कहा कि, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है, उनका नेतृत्व लोगों को पसंद आ रहा है। भाबर ने तीन राज्यों में भाजपा की सरकार बनने एव प्रचंड जीत पर थांदला नगर में जुलूस निकालकर नगर एंव क्षेत्रवासियों को बधाई दी।

दो ग्राम पंचायत सचिवो की वेतनवृद्धि रोकी

माही की गूंज, पेटलावद।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत झाबुआ के आदेशानुसार सूचना के अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत श्रवण कुमार मालवी द्वारा जानकारी चाही गई थी। जानकारी निर्धारित समय में नहीं दिए जाने से बाबुलाल कटारा तत्कालीन पंचायत सचिव बामनिया (वर्तमान ग्राम पंचायत मोईवागली) एवं मुन्नालाल अरड ग्राम पंचायत सचिव बामनिया के विरुद्ध मध्यप्रदेश पंचायत सेवा (ग्राम पंचायत सचिव भर्ती और सेवा शर्तें) नियम 2011 की कंडिका (7) के प्रावधान अंतर्गत दोनो ग्राम पंचायत सचिव बाबुलाल कटारा तथा मुन्नालाल अरड जनपद पंचायत पेटलावद की आगामी एक-एक वेतनवृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकी गई हैं।

हिन्दू जागरण मंच ने टंट्या मामा के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की

माही की गूंज ,सारंगी।

क्रांतिकारी टंट्या मामा बलिदान दिवस के अवसर पर सारंगी व क्षेत्र के आसपास से सैकड़ो कार्यकर्ता टंट्या मामा चौराहा सारंगी चौपाटी पर एकत्रित होकर उनके बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की, कार्यक्रम हिंदू जागरण मंच द्वारा किया गया। कार्यक्रम में टंट्या मामा की मूर्ति पर तिलक लगाकर एवं पुष्प माला पहना कर सभी कार्यकर्ताओं ने पुष्प चढ़ाकर उनके बलिदान दिवस को याद किया। इस अवसर पर हिंदू जागरण मंच के पदाधिकारी उपस्थित रहे। वही टंट्या मामा के जीवन पर विस्तार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहजिला कार्यवाहक कैलाश मालीवाड़ ने बताया कि, टंट्या मामा का जीवन कितना संघर्षमय था। उन्होंने अपना पूरा जीवन अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए लगा दिया एवं अंग्रेजों के खिलाफ एक क्रांतिकारी संघर्ष उन्होंने अपने जीवन में किया। हर समाज, हर वर्ग को हमारे क्रांतिकारियों को याद करना चाहिए एवं उनका सम्मान करना चाहिए तथा उनके बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए। तभी हम और हमारे आने वाली पीढ़ी सुरक्षित रहेंगे। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने भगवान बिरसा मुंडा की जयकारो के साथ भारत माता की जय के नारे लगाए।

धीरेंद्र शास्त्री के विवादित वीडियो हटाने के हाई कोर्ट ने दिए निर्देश

जबलपुर।

जबलपुर हाई कोर्ट ने पंडित धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ सोशल मीडिया पर डाले गए विवादित कंटेंट हटाने को लेकर आदेश दिए हैं। उनके एक शिष्य ने पूर्व विधायक के बयान और कंटेंट को आधार बनाकर कोर्ट में एक याचिका दायर की थी। जिस पर कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए विवादित टिप्पणी के मामले में यूट्यूब, फेसबुक और एक्स (पूर्व में ट्वीटर) को नोटिस जारी किया है। इसमें मध्य प्रदेश सरकार के गृह मंत्रालय को भी पार्टी बनाया गया है। कोर्ट ने सभी पक्षों से अगले दो सप्ताह में जवाब मांगा है।

कोर्ट ने निर्देश दिए हैं कि, सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री से जुड़े विवादित वीडियो हटाए जाएं। दोबारा ऐसी गलती न हो। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर आचार्य धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ आपत्तिजनक खबर फेसबुक और ट्विटर सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रकाशित कर उनकी छवि धूमिल करने खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई थी। जस्टिस संजय द्विवेदी की एकलपीठ ने याचिका की सुनवाई करते हुए

आचार्य धीरेंद्र शास्त्री की छवि धूमिल करने वाली खबरें को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से हटाने के आदेश दिये हैं। एकलपीठ ने आवेदकों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है और इसके लिए दो सप्ताह का समय दिया गया है। याचिकाकर्ता रणजीत पटेल की तरफ से दायर की गई याचिका में कहा गया था कि वह बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर आचार्य धीरेंद्र शास्त्री के अनुयायी हैं। उनके खिलाफ फेसबुक, ट्विटर सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उनकी छवि खराब करने आपत्तिजनक खबरें प्रकाशित की जा रही हैं। सुनवाई के बाद एकलपीठ ने अपने आदेश में कहा है कि व्यक्ति की छवि धूमिल करने वाली आपत्तिजनक खबरों की सत्यता जांचने के बाद उसे प्रकाशित करनी चाहिए। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता पंकज दुबे ने सुनवाई के दौरान स्कन्द पुराण, गुरु गीता तथा तैत्रीय उपनिषद के भाग का उल्लेख करते हुए इसे आपत्तिजनक बताया और फेसबुक, ट्विटर सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर आचार्य धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ आपत्तिजनक खबर हटाने के निर्देश दिये हैं।

राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय बालरंग महोत्सव 19 से 21 दिसंबर तक

माही की गूंज, खरगोन। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा 19 से 21 दिसंबर तक तीन दिवसीय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय 'बालरंग' महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। संयुक्त संचालक लोक शिक्षण अरविंद चोरगढ़े ने बताया कि 'राज्यस्तरीय बालरंग' में प्रदेश के सभी संभागों से 1000 छात्र-छात्राएं एवं 'राष्ट्रीय बालरंग' में विभिन्न राज्यों के लगभग 500 छात्र-छात्राएं सहभागिता करेंगे। इस वर्ष बालरंग महोत्सव की थीम 'आत्मनिर्भर भारत' होगी, जिसमें प्रदेश के छात्र-छात्राएं अपने जिले की संस्कृति, वेशभूषा, नृत्य एवं खानपान आदि को विभिन्न मंचों पर प्रदर्शित करेंगे। राज्यस्तरीय बालरंग में सांस्कृतिक, साहित्यिक, योग, संस्कृत, निशक्तजन एवं मदरसा प्रतियोगिताएं, राष्ट्रीय लोक नृत्य, लघु भारत प्रदर्शनी, विद्यार्थियों द्वारा निर्मित क्रिएटिव क्राफ्ट, गतिविधि आधारित प्रदर्शनी एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न जिलों एवं राज्यों के खाद्य पदार्थ (फूड जोन) की प्रदर्शनी और अन्य प्रतियोगिताएं भी आयोजित होंगी।

होमगार्ड स्थापना दिवस हर्ष के साथ मनाया

माही की गूंज, बड़वानी। इस वर्ष भी होमगार्ड तथा नागरिक सुरक्षा का 27 वां स्थापना दिवस कसरावद रोड स्थित होमगार्ड कार्यालय परिसर बडवानी में सादगी पूर्ण हर्षउल्लास के साथ मनाया गया। परेड कमाण्डर व्हीपीसी कमल कुशवाह थे, परेड में नम्बर एक टोली कमाण्डर हवलदार 09, धर्मेन्द्र मण्डलोई एवं नम्बर दो टोली कमाण्डर एसटीईआरएफ से. क. 120 मुकेश रोमडे थे। मुकेश मीणा प्लाटून कमाण्डर द्वारा डायरेक्टर जनरल होमगार्ड एवं आपदा प्रबंधन म.प्र. भोपाल का संदेश वाचन किया गया। मुकेश मीणा प्लाटून कमाण्डर द्वारा होमगार्ड का संक्षिप्त परिचय, जिले में किये गये वर्ष के दौरान उत्कृष्ट आपदा राहत कार्यों से अवगत कराया गया।

माँ भद्रकाली शक्ति पीठ की पावन धरा पर सात दिन बहेगी भागवत गंगा

माही की गूंज, रायपुरिया।

माँ भद्रकाली शक्ति पीठ की पावन धरा के ग्राम रायपुरिया में आज से 13 दिसंबर तक भागवत कथा का आयोजन किया जाएगा। जिसमे श्रीकृष्ण कामधेनु गौशाला एवं हरिहर आश्रम बनी के संस्थापक, विद्या साधना केंद्र के पीठाधीश्वर आचार्य डॉ. देवेंद्र शास्त्री धारियाखेड़ी मंदसोर व्यासपीठ पर विराजित होकर भगवान राधासर्वेश्वर प्रभु की दिव्य लीलाओं का गुणानुवाद करेंगे। रायपुरिया के सोलंकी परिवार की और से संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। सात दिवसीय कथा का शुभारंभ कलश शोभायात्रा से होगा। यह शोभायात्रा राम मंदिर से गाजे-बाजे के साथ ग्राम के प्रमुख मार्गों से गुजरते हुए कथास्थल पहुंचेगी। कलश यात्रा का मार्ग में विभिन्न समाजो द्वारा पुष्प वर्षा से स्वागत किया जाएगा।

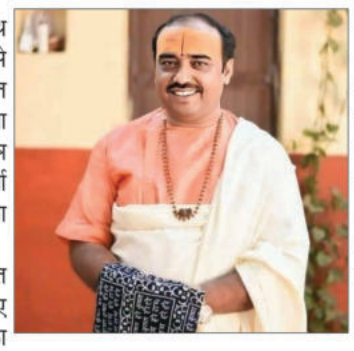

श्रीमद भागवत भक्ति महोत्सव के लिए परम पूज्य गुरुदेव का रायपुरिया ग्राम में मंगल प्रवेश हुआ। जिनका ग्रामवासियो ने स्वागत किया। परम पूज्य गुरुदेव का काफिला श्रीकृष्ण कामधेनु गौशाला बनी से डीजे के साथ सेकड़ो वाहनों से प्रारंभ हुआ। जिसका ओर हजारो भक्तो की संख्या में रायपुरिया पहुचा। जिनका जगह-जगह पुष्प वर्षा से स्वागत किया।

शुकदेवजी के आगमन से होगी शुरूआत

आयोजन के प्रमुख सूत्रधार मुकेश पाटीदार बनी, हरिराम पाटीदार बनी ने बताया कि, सात दिवसीय कथा के मध्य ठाकुरजी के दिव्य लीला प्रसंग सुनाए जाएंगे। श्रीमद् भागवत कथा महात्म्य व शुकदेवजी के आगमन की कथा सुनाई जाएगी। 8 दिसंबर को कपिल उपदेव व ध्रुव चरित्र, 9 दिसंबर को प्रहलाद चरित्र, नरसिंह अवतार और वामन अवतार की कथा होगी। 10 दिसंबर को श्रीराम अवतार व श्रीकृष्ण जन्म प्रसंग सुनाया जाएगा। सभी भक्त धूमधाम से प्रभु का जन्मोत्सव मनाएंगे। 11 दिसंबर को श्रीकृष्ण की बाल लीला व गोवर्धन लीला प्रसंग सुनाया जाएगा। 12 दिसंबर श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के साथ गोवर्धन पूजा की जाएगी। 13 दिसंबर को रासलीला रहस्य, गोपी गीत और उद्धव चरित्र की कथा के साथ श्रीकृष्ण रूकमणी विवाह उत्सव धूमधाम से मनाएंगे। 14 दिसंबर को श्रीकृष्ण सुदामा चरित्र का वर्णन किया जाएगा।

एड्स दिवस के उपलक्ष्य में कार्यशाला आयोजित

माही की गूंज, थांदला।

आदिवासी अंचल में स्वास्थ्य संबंधी भ्रांतियां बहुत अधिक है, अंधविश्वास व सही जानकारी नहीं होने के कारण बालक, किशोर-किशोरियां, युवा आदि कई जघन्य रोगों से व्यस्त हो जाते हैं तथा उचित परामर्श व चिकित्सा के अभाव में दुख-तकलीफ सहते हुए असमय काल कवलित हो जाते हैं। उक्त विचार महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेड रिबन क्लब के सौजन्य से राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम उमंग स्वास्थ्य केंद्र सिविल ।अस्पताल थांदला के तत्वावधान में एड्स दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यशाला में डॉ. शैलेश बारिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने सिकल सेल एनीमिया की विस्तृत जानकारी देते हुए इसके कारण, लक्षण व उपचार बताते हुए विवाह योग्य युवाओं को सिकल सेल परीक्षण करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ी में इस रोग की रोकथाम कुछ हद तक की जा सके।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए डॉ पीटर डोडियार ने कहा कि, इस प्रकार के आयोजन महाविद्यालय में होने से विद्यार्थी के माध्यम से उनके परिवार व ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता आएगी। विनीता मान्सारे ने सिकल सेल के चार्ट के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। साथ ही एड्स रोग के कारण व सावधानियां से अवगत कराया।

रमिला डामोर ने किशोर-किशोरियों में होने वाले बदलाव व समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने किशोरावस्था में शारीरिक-मानसिक व भावनात्मक बदलाव व समस्या पर भी जानकारी प्रदान की। छात्राओं को माहवारी, यौन समस्याओं व रोग संबंधित जानकारी भी दी। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग से संजय कटारा व मदन बारिया भी परामर्शदाता के रूप में उपस्थित रहे। महाविद्यालय के प्रो एएस मुवेल, डॉ मनोहर सोलंकी, डॉ. छगन वसुनिया, प्रो. विजय मावी, प्रो हिमांशु मालवीया, प्रो केएस डोडवे, डॉ जीडी भालसे, डॉ आरएस चौहान, डॉ सुनीता राज सोलंकी, डॉ मंजुला मंडलोई, प्रो कंचन बारस्कर, प्रो. रितु सिंह राठौड़, श्रीमती नेहा वर्मा, श्री विजय मावडा, श्री दिनेश मोरिया, श्री रमेश डामोर, विक्रम डामोर सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ मीना मावी ने व आभार डॉ दीपिका जोशी ने माना।

आने वाले लोकसभा चुनाव में क्या कांतिलाल के सितारे भी डूब जाएंगे...?

क्योंकि अब कांतिलाल कद्दावर तो शायद नही रहे....

माही की गूंज, झाबुआ।

प्रदेश में विधानसभा चुनाव पूरी तरह से संपन्न हो चुके हैं और परिणाम भी आ चुके है। एक बार फिर भाजपा प्रदेश में कब्जा जमाने में कामयाब रही है। भाजपा ने पूर्ण बहुमत के साथ प्रदेश की 230 सीटों में से 163 पर कब्जा जमाया है। जबकि कांग्रेस पिछले विधानसभा परिणामों से भी खिसक कर पीछे चली गई है। इस बार कांग्रेस को काफी नुकसान हुआ है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर रहा था। चुनाव के पहले यह बताया जा रहा था कि, इस बार तख्ता पलट होगा और कांग्रेस पूर्ण बहुमत के साथ मध्यप्रदेश में सरकार बनाएगी लेकिन यह कांग्रेस के लिए एक दिवा स्वप्न ही साबित हुआ। 30 नवम्बर के बाद जारी होने वाले एग्जिट पोलों ने भी कांग्रेस को आस्वस्त कर दिया था, लेकिन परिणामों ने कांग्रेस को एक किनारे पर ले जाकर खडा कर दिया। प्रदेश भर में आए चौकाने वाले नतीजों से हर कोई स्तब्ध रह गया। विधानसभा 2023 के परिणाम एग्जिट पोल के बिल्कुल विपरीत रहे और भाजपा, मध्यप्रदेश में सरकार बनाने में कामयाब रही है। हालांकि यहां एक बात और सामने आई कि इन परिणामों ने एग्जिट पोल की पोल खोलकर रख दी।

जिले की अगर बात करें तो यहां विधानसभा चुनावों के परिणाम काफी कशमकस भरे रहे है। मतगणना के दौरान पूरा दिन ही निकल गया कि, आखिर जीत कौन रहा है। जिले की तीनों विधानसभा सीटों पर जमकर मुकाबला रहा। प्रदेश के मुकाबले यहां के परिणाम थोड़े उलट रहे। यहां तीन सीटों में से 2 पर कांग्रेस कब्जा जमाने में कामयाब रही। हालांकि यह भी कांग्रेस का नुकसान ही है, क्योंकि पिछले विधानसभा चुनावों के पहले भी नतीजे तो यही थे, दो पर कांग्रेस काबिज हुई और झाबुआ विधानसभा भाजपा के खाते में चली गई थी। जिसके 2018 के आखिर में हुए उप चुनाव में झाबुआ विधानसभा भी कांग्रेस के पक्ष में चली गई थी। कुल मिलाकर जिले की तीनों सीटों पर कांग्रेस काबिज हो गई थी। इस बार 2023 में जिले के परिणाम पहले जैसे ही रहे लेकिन इस बार कांग्रेस ने पेटलावद सीट गवा दी। अब फिर से जिले में कांग्रेस-भाजपा का 2-1 का रेसों बन चुका है। इस तरह कांग्रेस अब एक सीट के नुकसान के साथ है। भाजपा जिले की दो सीट हारी है मगर प्लस पाईंट यह है कि प्रदेश में भाजपा ने अपनी सरकार बना ही ली है।

प्रदेश में विधानसभा चुनावों के परिणाम आते ही अब लोकसभा के लिए हलचल तेज होने वाली है। विधानसभा के परिणामों के बाद यह चर्चा सुनाई दे रही है कि, क्या इस बार रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर कांतिलाल हाथ आजमाएंगें...? अगर आजमाएंगे तो क्या भाजपा से संसदीय सीट छीनने में कामयाब हो पाएंगे...? या फिर इस बार कांतिलाल के पूरी तरह से सितारे डुब जाएगें...? कुल मिलाकर अब कांतिलाल पर सवालिया निशान लगता नजर आ रहा है। क्योंकि लोगों का यह मानना है कि, अब कांतिलाल कद्दावर नहीं रहे। वैसे तो कांतिलाल इस संसदीय सीट पर कई बार अपनी जीत दर्ज करवा चुके है, लेकिन बावजूद इसके पिछले लोकसभा चुनाव में वे भाजपा के गुमानसिंह से हार का मजा चख चुके है। इस बार विधानसभा 2023 में भी संसदीय सीट की 8 विधानसभाओं में से 4 पर भाजपा काबिज हुई है तो एक निर्दलीय के खातें में चली गई है। कांग्रेस के पास अब इस संसदीय क्षेत्र में केवल 3 ही सीटें बची है। हालांकि पिछले विधानसभा 2018 में इस संसदीय क्षेत्र की 8 सीटों में से 6 पर कांग्रेस काबिज हुई थी। भाजपा को सिर्फ दो सीटों से ही संतोष करना पड़ा था। कुल मिलाकर इस बार पूरे संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस को 3 विधानसभा सीटों का नुकसान उठाना पड़ा है।

लंबे समय से जिले में कांग्रेस की पहचान सिर्फ और सिर्फ कांतिलाल भूरिया के रूप में ही की जाती रही है। अभी तक जिले में कांग्रेसी नही सिर्फ भूरियाई थे, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। यही कारण भी रहा है कि कांतिलाल से बगावत करने वालों को अंतिम सांस तक सम्मान नहीं मिला। जिले में इसका सबसे बड़ा उदाहरण स्व. दिलीपसिंह भूरिया के रूप में सामने है। इतिहास गवाह है कांतिलाल से बैर दिलीपसिंह भूरिया को भारी पड़ा तो कांतिलाल के सामने दिलीपसिंह का राजनैतिक कद लगातार छोटा होने लगा। स्थिति यह हो गई कि, दिलीपसिंह भूरिया को पार्टी तक बदलना पड़ गई, परंतु सम्मान उन्हें वहां भी नहीं मिला। जिले में स्व. रतनसिंह भाभर भी एक कांग्रेसी शेर था, जो कांग्रेस के नहीं कान्तिलाल के विरोध में जाने की हिम्मत जुटा पाए थे। स्व. भाभर भी विधायक काल के पश्चात पार्टी की मुख्यधारा से दूर हुए और अंतिम सांस तक उन्हें पार्टी में अपेक्षित सम्मान जिसके वह हकदार भी थे नहीं मिल पाया। इसके अतिरिक्त कांतिलाल का विरोध झाबुआ जिला मुख्यालय पर कांग्रेस के एक धड़े में हमेशा रहा है और थांदला में यहीं स्थिति रही है। हालांकि यह लोग पूरी ताकत के साथ कभी कांतिलाल के विरोध में नहीं गए। कांतिलाल भूरिया जिले के राजनीतिक सुरमा है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। इस मत का समर्थन करने वालों के अनुसार भूरिया न सिर्फ कांग्रेस अपितु भाजपाई चौसर चलने में भी माहिर है।

झाबुआ-रतलाम जिले की संसदीय सीट पर कांतिलाल का कब्जा ही रहा है। इस संसदीय सीट पर कांतिलाल की न सिर्फ तुती बोलती अपितु परमेश्वर भी भूरिया का ही साथ देता आ रहा हैं। झाबुआ-रतलाम संसदीय क्षैत्र की पहचान ही कांग्रेस आलाकमान में कांतिलाल के नाम से है। जिले की राजनीति में कांतिलाल कद्दावर गिने जाने लगे तो कांग्रेस में कांतिलाल के बगैर पत्ता भी नहीं हिलने लगा। पिछले कुछ समय से कांतिलाल पर परिवारवाद के आरोप ज्यादा लगने लगे। कांतिलाल ने भी भूरिया के जयकारे लगाने वालों को सक्रीय रखा बाकि को लूप लाईन में डाल दिया। वर्षों तक कांतिलाल की इस चालाकी से कार्यकर्ता परेशान होते चले आए है। स्थिति यह है कि कांतिलाल विरोधी यदि येन केन प्रकारेण कांग्रेस से चुनाव टिकिट ले भी आए तो कांतिलाल की इच्छानुरूप विजय प्राप्त करना नामुमकीन है। यही कारण है कि भूरिया विरोधियों की संख्या जिले में लगातार बढ़ने लगी और स्वयं कांतिलाल भूरिया के पुत्र को इन विरोधियों का सामना करना पड़ा है। जिसके चलते वे एक बार हार का मुंह देख भी चुके है। 2018 और 2023 के विधानसभा चुनावों में बागियों ने कांतिलाल व उनके पुत्र विक्रांत को इतना परेशान किया कि, खुद कांतिलाल को चुनावी बागडोर अपने हाथों में लेना पड़ी थी। स्थिति यह हो गई कि कांतिलाल सिर्फ और सिर्फ पुत्र मोह में झाबुआ विधानसभा में ही सिमट कर रह गए । झाबुआ की अपेक्षा अन्य विधानसभाओं में कांतिलाल की मेहनत ना के बराबर ही रही। झाबुआ के अतिरिक्त सभी विधानसभा में टिकिट तो कांतिलाल समर्थको को मिले, परंतु प्रत्याशी स्वयं की मेहनत पर ही चुनाव लड़ते नजर आए। इन प्रत्याशियों को यदि कांतिलाल का साथ चुनाव के दौरान लगातार मिलता रहता तो पेटलावद, आलीराजपुर और रतलाम जिले की विधानसभाओं में भी जीत निश्चित थी, परंतु पुत्र मोह ने भूरिया को झाबुआ विधानसभा छोड़ने ही नहीं दी।

अब सवाल यह उठता है कि जो कांतिलाल इस संसदीय सीट से कई बार सांसद रह चुके है, क्या उनका प्रभाव अब खत्म होता जा रहा है। क्योंकि जिस संसदीय क्षेत्र से आप कई वर्षों सांसद रहे हो और जिसमें आपकी अच्छी पकड़ हो वहां से कांग्रेस को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। बढ़त की बजाय 3 विधानसभा सीटों का नुकसान कांतिलाल पर कई सवाल खड़े करता है। हालांकि इस संसदीय क्षेत्र में कई बार कांतिलाल का विरोध कांग्रेस में ही मुखर हुआ है और इस विरोध के परिणाम भी कांतिलाल ने भुगते है। संसदीय क्षेत्र में कांतिलाल के इस विरोध का एक बड़ा कारण उनका पुत्र मोह भी है। जिसका हमेशा कांग्रेसियों ने विरोध किया है। परिवार वाद के आरोप से भी कांतिलाल अछूते नहीं रहे है। 2018 में भी इस संसदीय क्षेत्र से जो 6 सीटें कांग्रेस को मिली थी, उसमें कांतिलाल का कोई हाथ नहीं था। माही की गूंज ने उस समय भी अपनी मुखर कलम से यह लिखा था कि कांग्रेस में प्रत्याशी कांतिलाल के नहीं खुद अपने दम पर जीते है। यह तत्समय सही भी साबित हुआ था। क्योंकि कांतिलाल का पुत्र मोह उस समय भी आड़े आया था, मगर बावजूद इसके 2018 में कांतिलाल अपने पुत्र को महज झाबुआ विधानसभा जिताने में भी विफल ही हुए थे।

इस बार विधानसभा 2023 में भी कांतिलाल का वही रवैया रहा जो 2018 में था। इस बार भी कांतिलाल ने अपने बेटे विक्रांत भूरिया को ही टिकट दिलवाई। मगर इस बार झाबुआ विधानसभा जीतना कांतिलाल के लिए नाक का सवाल था। इसलिए हुआ यह कि कांतिलाल ने अपना पूरा जोर सिर्फ और सिर्फ झाबुआ विधानसभा पर अपने बेटे को जिताने के लिए लगा दिया। परिणाम यह सामने आए कि बहुत ही करीबी अंतर से विक्रांत को जीत तो मिल गई लेकिन संसदीय क्षेत्र की विधानसभा सीटों से कांग्रेस का सुपड़ा साफ हो गया। झाबुआ के अलावा जिन दो सीटों पर कांग्रेस इस संसदीय क्षेत्र में जीती है वह प्रत्याशियों की अपनी निजी छवि के कारण ही जीत पाई है। वरना कांतिलाल के भरोसे पर तो शायद कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिल पाती झाबुआ विधानसभा को छोड़कर। इन सारी बातों से एक बात तो यह साफ होती दिखाई दे रही है कि कांतिलाल अब इस संसदीय सीट के लिए शायद कद्दावर नेता तो नहीं रहे। संसदीय सीट पर चुनाव हारने के बाद उनका संसदीय क्षेत्र में जीवित संपर्क भी अब लगभग मृत अवस्था में पहुंच चुका है। क्योंकि पिछले पांच सालों में कांतिलाल के साथ हुए घटनाक्रम ने जो खिलवाड़ किया है, वह यह कि सांसद का चुनाव हारने के बाद खाली हुई विधानसभा सीट पर विधानसभा चुनाव लड़ना पड़ा और उसके बाद सिर्फ कांतिलाल विधायकी तक ही सिमट कर रह गए। चूंकि इस बार कांतिलाल अपने पुत्र को विधानसभा पहुंचाने में कामयाब हो गए है, तो वे खुद अब पूरी तरह से न्यूटल दिखाई दे रहे है। आने वाले लोकसभा में वे किस तरह से भाजपा को टक्कर देंगे यह तो भविष्य के गर्त में है। मगर आम चर्चा यह दर्शा रही है कि, विधानसभा चुनावों के परिणाम और कांतिलाल का इस तरह न्यूटल होना अच्छे संकेत नहीं है कांतिलाल के लिए...? क्योंकि यह माना जा रहा है कि संसदीय क्षेत्र में अब कांतिलाल कद्दावर तो नहीं रहे, इसलिए क्या उनके सितारे डुबना तय है...?

कलेक्टर ने मोरडूंडिया व राणापुर शिक्षा परिसर का किया औचक निरीक्षण

माही की गूंज, झाबुआ।

कलेक्टर सुश्री तन्वी हुड्डा द्वारा बुधवार को राणापुर विकासखंड के एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय मोरडूंडिया एवं कन्या शिक्षा परिसर राणापुर के छात्रवास का आकस्मिक निरीक्षण किया।

सुश्री हुड्डा ने सर्वप्रथम ईएमआरएस मोरडूंडिया में सीधे कक्षाओं में पहुंचकर शिक्षकों के द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ का निरीक्षण किया एवं छात्रों से पढ़ाई को लेकर प्रश्न किए। कक्षा 8 वी में शिक्षक द्वारा संस्कृत विषय पढ़ाया जा रहा था, जहां कलेक्टर द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ का अर्थ छात्रों से पूछा। साथ ही क्लास टीचर को निर्देशित किया कि, सभी छात्र अपनी पुस्तक कक्षा में लेकर आए यह सुनिश्चित करें।

कलेक्टर द्वारा विशेष रूप से बोर्ड की कक्षा 10 वी व 12वी की कक्षा में पहुंचकर छात्रों से संवाद किया। उन्होंने छात्रों से अभी तक पढ़ाए गए पाठ की जानकारी ली तथा पूर्ण हो चुके पाठ से संबंधित छात्र-छात्राओं से प्रश्न पूछे जिसके जवाब छात्रों द्वारा भी दिए गए। कलेक्टर द्वारा छात्रों से कहा गया कि, आप पूर्ण हो चुके पाठ का लगातार रिवीजन करे जिससे परीक्षा के अंतिम समय में याद करने में किसी भी प्रकार की समस्या

उत्पन्न नहीं होगी।

इसके पश्चात कलेक्टर द्वारा कन्या शिक्षा परिसर राणापुर के छात्रावास का निरीक्षण किया गया। जहां निवासरत छात्राओं से चर्चा की तथा उनसे छात्रावास में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली। कलेक्टर द्वारा छात्रवास अधीक्षिका को भोजन की गुणवत्ता एवं छात्रवास की साफ-सफाई को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। निरीक्षण के समय सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग श्रीमती निशा मेहरा उपस्थिति रही।

अविवाहिता की सेरोगेसी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को किया तलब

नई दिल्ली, एजेंसी।

सुप्रीम कोर्ट ने किराये की कोख (सेरोगेसी) को अविवाहित महिलाओं के लिए प्रतिबंधित करने के प्रविधान को चुनौती देने वाली याचिका पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया है। सेरोगेसी के जरिये मां बनने के कानून के प्रविधानों पर विचार करने के लिए सर्वोच्च अदालत ने सहमति जताई है। जस्टिस बीवी नागरत्ना और उज्जल भुयन की खंडपीठ ने केंद्र को नोटिस जारी करके जवाब मांगा है। सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ वकील सौरभ किरपाल संक्षिप्त सुनवाई में याचिकाकर्ता नेहा नागपाल की ओर से पेश हुए। अधिवक्ता सौरभ ने कहा कि सेरोगेसी के मौजूदा कानून में कई झोल हैं। इसके प्रविधान संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता के अधिकार) और अनुच्छेद 21 (जीवन और निजी स्वतंत्रता के अधिकार) का उल्लंघन करते हैं।

केंद्र की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सालीसिटर ऐश्वर्य भाटी ने खंडपीठ को बताया कि, वृहत्तर बेंच के समक्ष अविवाहित महिला की सेरोगेसी का मामला लंबित है। सौरभ किरपाल ने कहा कि इस मामले को सुना जाना चाहिए क्योंकि यह बड़ा संवैधानिक सवाल है।

इसके बाद खंडपीठ ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी करने का आदेश दिया है। याचिका में कहा गया कि, याचिकाकर्ता को बिना विवाह के भी प्रजनन व मातृत्व का अधिकार है। याचिकाकर्ता डायबटीज की मरीज है। उसकी आयु 40 वर्ष है। उसे बताया गया है कि 36 वर्ष की आयु के बाद महिलाओं के गर्भधारण में जटिलताएं होती हैं, खासकर जब वह मधुमेह की मरीज हों। वह स्वाभाविक तरीके से गर्भधारण नहीं कर सकती है।

पंचायत सचिव के पद पर अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान की

माही की गूंज, झाबुआ।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत झाबुआ के आदेशानुसार मध्यप्रदेश शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मंत्रालय के आदेश अनुसार तथा जिला पंचायत, झाबुआ की छानबीन समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन के आधार पर पात्रतानुसार, ग्राम पंचायत, पिपलिया (पारारोड), जनपद पंचायत झाबुआ में सेवारत पंचायत सचिव स्व0 श्री मोहनसिंह झणिया की सेवा में रहते 07 नवम्बर, 2013 को मृत्यु हो गई थी जिसके फलस्वरूप उनके स्थान पर उनके पुत्र श्री पंकज झणिया को अनुकम्पा नियुक्ति दी गई है।

यह अनुकम्पा नियुक्ति एवं म.प्र. पंचायत सेवा (ग्राम पंचायत सचिव भर्ती और सेवा की शर्तें) नियम 2011 तथा समय-समय पर शासन द्वारा प्रसारित दिशा निर्देशों के तहत अधीन प्रदान की गई है।

तेरी जीत से ज्यादा मेरी हार के चर्चे...

बिना संगठन और किसी बडे मुद्दे के कड़ी टक्कर दी भाजपा को, छोटे चुनावो में लापरवाही पड़ी भारी

माही की गूंज, पेटलावद।

भले पेटलावद विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी वालसिह मेड़ा को 5647 के अंतर से हार का सामना करना पड़ा हो। लेकिन वालसिह की हार के बाद भी उनकी हार के चर्चे निर्मला भूरिया की जीत से ज्यादा है। भाजपा जैसे बड़े संगठन के सामने विधायक एन्टी इनकमबेसी रहते हुए भी कड़ा मुकाबला किया। जहां एक ओर भाजपा ने संगठन के कई बड़े नेताओं को मैदान में उतारा, वही कांग्रेस की और से वालसिह मेड़ा उनके पुराने कार्यकर्ताओ के साथ अकेले किला लड़ाते नजर आये। भाजपा के सामने कड़ी चुनौती बनकर उभरने से पहले कांग्रेस में टिकिट के लिए कड़ा संघर्ष करने के बाद अंतिम समय मे टिकिट मिली। वही भाजपा ने अपना प्रत्याशी चुनाव के दो माह पूर्व ही घोषित कर दिया था। वालसिह के सामने अंतिम समय तक बागी उम्मीद्वार सहित जयस ओर बाप पार्टी की चुनौती से निपटने की जिम्मेदारी थी। वही भाजपा के पास कोई बागी या किसी दूसरे दल से कोई खतरा नही था। पूरे चुनाव के दौरान वालसिह मेड़ा के जीत के कयास लगाए जाते रहे। वालसिह के पास सरकार में कांग्रेस आने के बाद के वादे थे, तो निर्मला के पास लाडली बहना योजना, राष्ट्रहित का मुद्दा, मोदी का बड़ा चेहरा, गुजरात सहित अन्य राज्यों से बूथ स्तर तक मैदानी इलाको में काम करने के लिए बड़ी टीम ओर मंडल स्तर के संगठन के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में बड़ा वोट बैंक ,हिन्दू संगठन का सहयोग ओर सत्ता दबाव। इसके बाद भी वालसिंह मेड़ा ने कांग्रेस के कमजोर संगठन के दम पर अकेले किला लडाते हुए भाजपा को मजबूत टक्कर दी। जहा भाजपा के नेता इस बार 25 हजार मतो से जीत के दावे कर रहे थे और पेटलावद विकास खण्ड से बाप पार्टी की उपस्थिति के चलते इस बार भाजपा की जीत के दावे भी किये गए। चुनाव परिणाम में सारे दावे ओर संगठन की हवा निकल गई और वालसिह मेड़ा भाजपा पर भारी दिखे ओर 1400 की लीड के साथ रामा पहुंच गये। मतगणना के 23 में 17 राउंड तक वालसिंह मेड़ा भाजपा पर बढ़त बनाते हुए भाजपा नेताओं को

मानसिक रूप से हराने में कामयाब रहे। अंत मे भाजपा का मजबूत क्षेत्र माने जाने वाला पारा-कालीदेवी क्षेत्र भाजपा के लिए परिणाम बदलने में कामयाब रहा और इस क्षेत्र के चार से पांच बूथों पर मिली बड़ी हार ने वालसिंह के परिणाम बदल दिए। चुनाव परिणाम के बाद हर किसी के पास वालसिह मेड़ा की तारीफ सुनने को मिल रही है जिंसमे कम संसाधनों और मजबूत विपक्षी के सामने कड़ा संघर्ष किया। हालांकि इस हार के पीछे बड़ा कारण बाप पार्टी ही रही, जो कांग्रेस या कहे कि, वालसिंह की उम्मीद् से ज्यादा 8 हजार से अधिक वोट लाने में सफल रही। चुनाव के बाद कांग्रेस में हार के मंथन के ज्यादा कारण नही है। लेकिन वालसिंह के संघर्ष ने भाजपा को मंथन करने पर मजबूर कर दिया कि, इतनी शक्ति, मुद्दे, संगठन, संघ और मोदी लहर के बाद भी भाजपा के वोट बैंक को सेंध एक अनपढ़ विधायक के तमके के साथ उतरगे वालसिंह ने कैसे लगा दी। कांग्रेस के अंतर्कलह से पार पाकर चुनाव के मैदान में उतरे वालसिह मेड़ा भले आंकड़ों का चुनाव हार गए। लेकिन उनके प्रदर्शन ने विपक्षी दल को सकते में डालकर मानसिक जीत हासिल जरूर की।

स्थानीय चुनाव मैदान में उतरना भारी पड़ा

वालसिंह मेड़ा के सामने हार के कारणों को लेकर ज्यादा मुद्दे नही है और उनकी हार का सबसे बड़ा कारण स्थानीय जिला पंचायत चुनाव में अपने ही दल के मजबूत कार्यकर्ताओ के विरोध मे उतरकर चुनाव लड़वाना भारी पड़ गया। पेटलावद ओर रामा विकास खण्ड में जिला पंचायत के चुनावों हर सीट पर वालसिंह का हस्तक्षेप उनके लिए हानिकारक साबित हुआ। सबसे बड़ा नुकसान पेटलावद विकास खण्ड में कांग्रेस की जीती हुई, जिला पंचायत सदस्य कलावती गेहलोत को कांग्रेस प्रत्याशी बनवाने की जगह खुद के बेटे को मैदान में उतारना, वही रामा क्षेत्र में भी वालसिह मेड़ा ने स्वयं की बेटी को मैदान में उतार कर कांग्रेस द्वारा घोषित प्रत्याशी प्रियंका डामोर की हार का कारण बनना। बेटे को आगे बढ़ाने और खुद की विधानसभा चुनावों में कोई बडी चुनोती नही मिले इसके चलते स्थानीय चुनावो में अपने ही नेताओं की काट अंतिम समय मे भारी पड़ी। वही टिकिट के दावेदार के रूप में कड़ी चुनौती देने वाले मालू अकमाल के समर्थकों को बागी ओर विरोधी बताकर उनसे दूरी बनाना अंतिम में वालसिह मेड़ा के कड़े संघर्ष पर पानी फेरने के लिए काफी रहा। समय से पहले अगर इस सब से पार पाने के मिले मौके नहीं भुनाना अंत मे वालसिंह की हार का कारण बने।

नेशनल लोक अदालत 9 दिसम्बर को

माही की गूंज, झाबुआ। प्रदेश के सभी जिलों में 9 दिसम्बर शनिवार को नेशनल लोक अदालत आयोजित की जाएगी। इसी क्रम में झाबुआ में प्रातः 10:30 बजे जिला न्यायलय परिसर नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इसका शुभारम्भ प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अध्यक्ष द्वारा किया जाएगा। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार नेशनल लोक अदालत में चिन्हित किये गये मुकदमा पूर्व और न्यायालयों में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों को निराकरण के लिये रखे जायेगा। लोक अदालत में राशि वसूली, श्रम और रोजगार संबंधी विवाद, बिजली, पानी के बिलों सहित अन्य बिल भुगतान, मेंटेनेंस सहित अन्य प्रकरणों को लोक अदालत में रखे जाएगे।

श्रमिकों के मजदुरी भुगतान हेतु आधार आधारित परिवर्तन में रूचि नहीं लेने वाले सचिव व रो.सहायक को नोटिस

माही की गूंज, झाबुआ। शासन के निर्देशानुसार मनरेगा योजना अंतर्गत समस्त श्रमिकों के मजदुरी भुगतान आधार आधारित किये जाने हेतु दिसम्बर 2023 की समय-सीमा निर्धारित की गई है। जिले में 3,39,944 सक्रिय श्रमिकों के विरूद्ध 2,94,373 श्रमिकों का भुगतान आधार आधारित में परिवर्तित किया जा चुका है। शेष 45,570 श्रमिकों का एबीपीएस किया जाना शेष है। जिसमें जनपद पंचायत रामा के 9,378 एवं जनपद पंचायत रानापुर के 7,659 श्रमिकों को आधार आधारित भुगतान एबीपीएस में परिवर्तित किया जाना शेष है। शेष श्रमिकों का एबीपीएस में परिवर्तित हेतु संबंधित ग्राम पंचायत के सचिव, ग्राम रोजगार सहायक को लगातार निर्देशित किये जाने के बावजूद भी इनके द्वारा इस कार्य में रूचि नहीं ली जाने से संबंधितों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है। इनके द्वारा प्रस्तुत प्रतिउत्तर समाधानकारक नहीं होने से जनपद पंचायत रामा की ग्राम पंचायत धामन्दा, झुमका, आम्बापिथनपुर, झकेला एवं कलमोडा एवं जनपद पंचायत रानापुर की ग्राम पंचायत सरदारपुरा, भोडली, कंजवानीखास, मातासुला एवं वगई बडी के ग्राम रोजगार सहायकों को माह नवम्बर 2023 में 5 दिवस हेतु अवैतनिक किया गया है। तथा इन जनपद पंचायतों के अति.कार्यकम अधिकारी एवं सहायक लेखाधिकारी को भी 5-5 दिवस हेतु अवैतनिक किया गया। साथ ही इस कार्य को 3 दिवस में शत-प्रतिशत पूर्ण कार्य करने के निर्देश दिये है। तत्पश्चात भी इनके द्वारा कार्य पूर्ण नहीं किया जाता है तो संबंधितों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

संपादकीय

विकसित देशों से ईमानदार पहल जरूरी

एक बार फिर दुनिया के तमाम देश लगातार ग्लोबल वार्मिंग से मानवता पर मंडराते संकट को दूर करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात में एकजुट हुए हैं। दुबई में आयोजित संयुक्त राष्ट्र फेमवर्क कन्वेंशन के 28वें सम्मेलन से पूरी दुनिया की आस जगी है। दुनिया टकटकी लगाए बैठी है कि, कॉप-28 सम्मेलन से धरती को बचाने के लिए कुछ ठोस निर्णय लिए जाएंगे। बीत रहे वर्ष में मौसम के चरम के चलते तापमान वृद्धि, अलनीनो प्रभाव से बढ़ता समुद्री तापमान, अंटार्कटिका में तेजी से बर्फ के पिघलने, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि और चक्रवातों के जो भयावह परिणाम सामने आए, वो बता रहे हैं कि यदि अब निर्णायक फैसले न हुए तो धरती को बचाना मुश्किल हो जाएगा। अब तक के तमाम पर्यावरण सम्मेलनों में वायदे तो बड़े-बड़े हुए हैं लेकिन ठोस काम इस दिशा में नहीं हो पाया है। खासकर विकसित देशों के अड़ियल रवैए से इस दिशा में आशाजनक प्रगति नहीं हो पाई है। जबकि मौजूदा हालात में विकसित देशों से न केवल कार्बन उत्सर्जन कम करने की उम्मीद है बल्कि हरित ऊर्जा में निवेश बढ़ाने की भी दरकार है। वह भी ऐसे वक्त में जब ग्लोबल वार्मिंग हर देश के दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है। दुर्भाग्य की बात यह कि, पेरिस समझौते में औद्योगिक क्रांति से पूर्व स्थिति के अनुरूप जिस तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने की बात हुई थी, उस लक्ष्य को अब तक नहीं पाया जा सका है। धरती का ताप अनुकूलक माने जाने वाले अंटार्कटिका की बर्फ तेजी से पिघलना हमारी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। यही वजह है कि बीत रहे वर्ष में मौसम के चरम की तमाम घटनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। ऐसे में दुनिया के पर्यावरण संरक्षण से जुड़े तमाम संगठन व आम लोग उम्मीद कर रहे हैं कि, कॉप-28 में कुछ बदलावकारी फैसले लिए जाएं।

दरअसल, यह वक्त अब तक के तमाम सम्मेलनों में लिये गए फैसलों पर पुनर्विचार का भी है। यह विचार मंथन का अवसर है कि, पिछले वर्ष मिस्र में हुए सम्मेलन के निष्कर्ष कहां तक अमल में लाये जा सके हैं। दुखद ही है कि, दुनिया के तमाम संपन्न देश संकीर्ण स्वार्थों में उलझे हुए हैं जबकि धरती के अस्तित्व पर गंभीर संकट मंडरा रहा है। यह वक्त नेट जीरो के लक्ष्य हासिल करने के लिए ईमानदार पहल करने का भी है। सवाल यह भी कि, धनी देश हरित ऊर्जा में कितना निवेश करते हैं। यह भी कि धनी देश विकासशील देशों द्वारा अपने आर्थिक विकास की कीमत पर नेट जीरो के लक्ष्य हासिल करने में कितनी मदद करते हैं। उन औद्योगिक इकाइयों का नियमन भी जरूरी है जो भारी मात्रा में प्रदूषण फैलाते हैं। नि:संदेह, यदि हमें आने वाली पीढ़ियों का भविष्य संरक्षित करना है तो आर्थिक विकास की गति धीमी करने से भी गुरेज नहीं करना चाहिए। भारत ने हमेशा जलवायु प्रतिबद्धताओं को लागू करने में ईमानदार पहल की है। भारत ने ग्लासगो में हुए कॉप-26 सम्मेलन में वर्ष 2070 तक शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य पाने की घोषणा की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तब अपनी पंचामृत रणनीति का खुलासा किया था। जिसमें उन्होंने 2070 तक शून्य उत्सर्जन के अलावा वर्ष 2030 तक ऊर्जा क्षमता में गैर जीवाश्म ईंधन की हिस्सेदारी को पचास फीसदी तक बढ़ाने का वायदा किया है। इसके अलावा वर्ष 2030 तक वार्षिक नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता को 500 गीगावॉट तक बढ़ाना तथा कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन तक कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। निश्चित रूप से ये लक्ष्य जलवायु संरक्षण को लेकर भारत की प्रतिबद्धता को ही दर्शाते हैं। ऐसे में धनी देशों को उन देशों की मदद के लिये आगे आना होगा जो वैश्विक पर्यावरण को बचाने के लिये अपने आर्थिक हितों से समझौता कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं कि, आज दुनिया में जो पर्यावरणीय संकट मंडरा रहा है उसके मूल में विकसित देशों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की निर्मम लूट भी शामिल है। उम्मीद की जानी चाहिए कि कॉप-28 में धरती को बचाने के लिए ठोस निर्णय लिए जाएंगे।

जीत-हार के बीच कुछ अनुत्तरित प्रश्न

विश्वनाथ सचदेव

चुनाव के 'सेमीफाइनल' का नतीजा सामने है। भारतीय जनता पार्टी को इन चार राज्यों के चुनाव में अप्रत्याशित जीत मिली है। लगभग सारे चुनावी अनुमानों को ग़लत साबित कर दिया है इन परिणामों ने। राजनीति के पंडित हिसाब लगाने में लगे हैंदू कुछ दावे कर रहे हैं, उन्होंने तो पहले ही कह दिया था, कुछ इसे भाजपा के राजनीतिक कौशल का परिणाम बता रहे हैं, कुछ विपक्ष की ग़लत रीति-नीति को दोषी ठहरा रहे हैं। कुछ भी कहें पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी का करिश्मा काम आया है। कई कारण गिनाये जा सकते हैं चुनाव के नतीजों के संदर्भ में, पर यह एक हकीकत है कि प्रधानमंत्री ने सारा प्रचार-कार्य कुछ इस तरह से किया कि अगर जीत होती है तो यश उनकी ही झोली में पड़े। यही अब कहा भी जा रहा है।

मोदी है तो मुमकिन है का नारा बार-बार दुहराया जा रहा है। 'मोदी की गारंटी' के जादू का झंडा कुछ इस तरह से फहराया जा रहा है जिससे लगे कि जीत के नायक वही हैं। और इसमें कुछ ग़लत भी नहीं है। इस सेमीफाइनल के परिणाम कुछ और होते तो कम से कम विपक्ष उन्हें 'कारक' कहने-बताने में चूकता नहीं।

भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच हुए विश्व कप मुकाबले के उदाहरण को सामने रखें तो यह कहा जा सकता है कि यह कतई ज़रूरी नहीं है कि फाइनल का परिणाम भी वही हो जो सेमीफाइनल का रहा है। वर्ष 2024 में होने वाले आम चुनाव को इस सेमीफाइनल के संदर्भ से नहीं आंका जा सकता। बहरहाल, अब राजनीतिक दल अपने-अपने हिसाब से चुनावी नतीजों का विश्लेषण करेंगे आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे। जीतने वाले मतदाताओं का आभार व्यक्त करेंगे, और हारे हुए स्वयं को यह आश्वासन देंगे कि आगे मतदाता ऐसी 'ग़लती' नहीं करेंगे।

विश्लेषण तो हर चुनाव परिणाम का होना चाहिए। अब भी होगा। पर एक बात जो इस बार स्पष्ट उभर कर सामने आयी है, वह यह है कि राजनीतिक दल यह मानकर नहीं चल सकते कि मतदाता उनकी बात पर भरोसा करेगा ही। न ही यह माना जा सकता है कि मतदाता को हमेशा भरमाया जा सकता है। इसी तरह, इस बात पर भी विचार होना चाहिए कि हमारे यहां जिस तरह का चुनाव-प्रचार होता है, या फिर मतदाता को रिझाने की जिस तरह से कोशिशें होती हैं, वह जनतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से कितनी सही हैं?

इन चुनाव में हमने देखा कि वादे और दावे तो हुए ही, एक नया शब्द भी ईंजाद किया गयादृगारंटी। वैसे तो वादा भी गारंटी ही होना चाहिए, पर इस बार चुनाव-प्रचार में इस शब्द पर विशेष ज़ोर दिया गया। कांग्रेस पार्टी ने शायद सबसे पहले यह शब्द काम में लिया था, फिर प्रधानमंत्री ने इसे 'मोदी की गारंटी' कह कर और ज़्यादा पुख्ता बनाने की कोशिश की। भले ही यह किसी ने नहीं बताया कि कथित गारंटी पूरी करने का आधार क्या होगा, पर लगता है, गारंटी का जादू काम कर गया। चुनाव-प्रचार की एक और बात जिस पर गौर किया जाना ज़रूरी है, वह यह है कि इस बार उन मुद्दों की बात बहुत कम हुई जिन्हें जिंदगी के ज़रूरी मुद्दे कहा जाता है। मसलन गरीबों की बात को 'वैश्विक अर्थव्यवस्था' की आकर्षक शब्दावली से ढकने की कोशिश हुई। यूं कहने को प्रधानमंत्री ने यह अवश्य कहा कि वे सिर्फ गरीबी को ही जाति मानते हैं, पर ज़ोर उनका इस बात पर भी रहता था कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के कार्यकाल में हमारा भारत विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था बन गया है और शीघ्र ही हम 'विकसित देशों' की श्रेणी में आ जाएंगे। तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था बन जाएंगे। मतदाता को किसी ने यह बताने की ज़रूरत नहीं समझी कि पांचवीं या तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था का मतलब क्या होता है? मतदाता को अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से यह पूछना चाहिए कि पांचवें से तीसरे नंबर तक आने से उसकी दो जून की रोटी सुरक्षित हो जाएगी? विडंबना तो यह है कि आज एक ओर विकसित देश बनने के वादे किये जा रहे हैं और दूसरी ओर अस्सी करोड़ भारतवासियों को मुफ्त अनाज देने की व्यवस्था से घिरे हैं हम!

इन चुनावों के प्रचार के दौरान न विपक्ष यह पूछ रहा था और न ही सत्तारूढ़ पक्ष यह बताना ज़रूरी समझ रहा था कि वैश्विक गरीबी सूचकांक के अनुसार हमारी सोलह प्रतिशत आबादी के गरीब होने के कारण क्या हैं? इस बात को नहीं भुलाया जाना चाहिए कि वैश्विक भूख सूचकांक की 123 देशों की सूची में भारत का स्थान 107वां है। चुनाव-प्रचार के दौरान इसकी भी चर्चा कहीं सुनाई नहीं दी। ग़रीबी की तरह ही बेरोज़गारी का मुद्दा भी कुल मिलाकर अनसुना ही रहादृ विपक्ष के भाषणों में यह शब्द कभी-कभी सुनाई दे जाता था, पर इसे उस ताकत से नहीं उठाया गया जितनी ताकत से उठाया जाना चाहिए था।

चुनाव-परिणामों का विश्लेषण करने वालों का कहना है कि इस बार महिला-मतदाताओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। ज़रूर रही होगी। महिलाओं ने मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है, यह सही है। चुनाव-परिणामों पर भी इसका निश्चित असर पड़ा है। पर यह बात कब किसी ने सामने लायी कि देश की आधी से अधिक महिलाएं शारीरिक दृष्टि से कमज़ोर क्यों हैं? महिला सशक्तीकरण के नाम पर ढेरों घोषणाएं हुई हैं, सभी दलों ने महिलाओं को लाभ दिलाने के वादे किये, सस्ता सिलेंडर, घर में नल, नकद सहायता आदि की तो बहुत दुहाई दी गयी, पर विधायिका में महिलाओं को तीस प्रतिशत भागीदारी देने और उसका समर्थन करने वालों में से किसी भी राजनीतिक दल में इन चुनावों में एक-तिहाई उम्मीदवार खड़े करना ज़रूरी नहीं समझा!

देश में आईआईटी और आईआईएम खोले जाने की बातें भी हुईं, पर यह बात किसी ने भी नहीं उठायी कि देश में एक लाख से कहीं अधिक स्कूलों में सिर्फ एक अध्यापक क्यों है? हमारे नेता जब विदेशों में जाते हैं तो प्रवासी भारतीयों की योग्यता-क्षमता की खूब तारीफ करते हैं। खूब तालियां बजवाते हैं उनसे। पर यह सवाल हमारे राजनेताओं के ज़हन में क्यों नहीं आता कि हर साल एक लाख से अधिक भारतीय देश छोड़कर क्यों चले जाते हैं? प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पिछले ही साल यानी 2022 में 25 हज़ार भारतीयों ने नागरिकता छोड़ी थी। आखिर क्यों? यह सब वे नहीं है जिन्हें ग़लत काम करके देश से भागने दिया गया है। ऐसे लोग तो गिनती के हैं। सवाल तो उन लाखों का है जो देश की परिस्थितियों के कारण 'बेहतर ज़िंदगी' के लिए देश छोड़कर जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

यह और ऐसे मुद्दे हमारे चुनावों का हिस्सा क्यों नहीं बनते? सवाल प्राथमिकताओं का भी है। यह संभव है कि जो मुद्दे उठाये गये वे भी उठने लायक हों, पर जो नहीं उठाये गये वे तो इस बात का उत्तर मांग रहे हैं कि जाति, धर्म, भाषा आदि को वोट मांगने का आधार क्यों बनाया जाता है? यह सवाल मतदाताओं को अपने प्रतिनिधियों से पूछना होगा कि वे यह क्यों मान लेते हैं कि मतदाता उनकी मुट्ठी में है?

मनवा तू मन के लड्डू फूटने से बचा

मसला अजीब है। लड्डू को मन में रखना है। शर्त ये है कि मन में लड्डू फूटना नहीं चाहिए! असंभव है मन में लड्डू को फूटने से बचाना। बाहर रखे असली लड्डुओं को फूटने से बचाने का यत्न किया जा सकता है, मन में लड्डू को नहीं। लड्डू मन में आए कि फूटे। वे मन में कभी साबुत नहीं बचते। फूट ही जाते हैं। लगभग हर एक व्यक्ति के मन में लड्डू फूटते हैं। शायद जानवरों के मन में भी फूटते हों। वे नहीं जानते कि लड्डू क्या बला है। यह मानवीय आविष्कार है। खाने के मामले में लड्डू मनुष्य का पहला पकवान माना जा सकता है। बहरहाल, मन बड़ा जिद्दी होता है। वह चाहे कितना भी व्यस्त हो, लड्डू फोड़ने का मौक़ा नहीं चूकता। गाहे-बगाहे मन में लड्डू फूटने लगते हैं।

मन में इतने लड्डू आते कहां से हैं? मौका चाहे कोई भी हो, वह लड्डू फोड़ने बैठ जाता है। आप चाट खाने गए हैं। चाट अभी हाथों में आई नहीं है। मन में लड्डू फूटे जा रहे हैं। सुंदर स्त्री देखते ही पुरुष मन धड़ाधड़ ढेरों लड्डू फोड़ने लगता है। मन के लड्डुओं की आवक खोज का विषय है। दुनिया का कड़वा सच यह भी है, जिन गरीबों को असली लड्डू नसीब नहीं होते, उनके मन में अक्सर लड्डू फूटते हैं। खराब किस्मत वालों के मन में लड्डू फूटने की गारंटी है।

असली लड्डू बनाने के कई तरीके और हज़ार सामग्री हो सकती है। मन के पास सामग्रियों की कमी नहीं है। वह बड़ा चालाक है। पता नहीं किस विधि, किसी भी चीज़ के लड्डू बना लेता है! और फिर फोड़ने लगता है। अपनी रचना को लेकर लेखक के मन में संपादक की स्वीकृति, प्रकाशन की सूचना और बड़ा मानदेय मिलने के लड्डू फूटते हैं। नेताओं के मन में जीत के लड्डू फूटते हैं। बीमार के मन में जीवन के लड्डू फूटते हैं। कुंवारों के मन में शादी के लड्डू फूटते हैं। चोर के मन में चोरी के और लंपट के मन में छोरी के लड्डू फूटते हैं।

बहरहाल, मन की बात कहने और मन में लड्डुओं के फूटने की आवाज़ से आवाम परिचित है। पिछले दिनों चुनावी जंग हुई। अब जीते हुए नेताओं के मन में पद और कुर्सी पाने के लड्डू फूटने लगे हैं। बेचारे हारे हुए प्रत्याशियों के असल लड्डू भी फूट गए। आध्यात्मिक जीवन का सूत्र है- जो व्यक्ति मन में लड्डू फूटने से बचा सके, वही सच्चा साधक हो सकता है। साधु भी वही है।

लेखक :- राकेश सोहम

एक बार फिर ईवीएम निशाने पर...

भारत में विमर्श के लिए राजनीति के अलावा और कोई मुद्दा खड़ा ही नहीं हो पाता। भाजपा की तीन राज्यों में अप्रत्याशित प्रचंड विजय के बाद अब चुनाव में इस्तेमाल की जाने वाली इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन यनि ईवीएम एक बार फिर से विवादों में है। आप कह सकते हैं कि ईवीएम विपक्ष के निशाने पर है। लेकिन सवाल ये है की ईवीएम क्या सचमुच भारत की निर्वाचन प्रक्रिया को दूषित कर रही है या उसे यूं ही बदनाम किया जा रहा है?

ईवीएम की कहानी बड़ी दिलचस्प है। ईवीएम का जन्म कांग्रेस के शासनकाल में हुआ और अब यही ईवीएम कांग्रेस केलिए भस्मासुर बन गयी है। भारत में इलेक्ट्रोनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (बैंगलोर) और भारत इलेक्ट्रोनिक्स (हैदराबाद) द्वारा 1989 में ईवाएम को बनाने की शुरुआत हुई थी। तब इसे एक साहसिक कदम माना जा रहा था। प्रयोग के तौर पर इस ईवीएम का इस्तेमाल सबसे पहले केरल के उत्तर पारावुर विधानसभा के 50 मतदान केंद्रों में हुए उपचुनाव में किया गया। कांग्रेस सरकार ने ही साल 2004 से सभी लोकसभा और विधानसभा चुनावों के लिए इस मशीन का इस्तेमाल शुरू किया।

ईवीएम उस जमाने में आयी जब मतदान कागज की पर्चियों पर होता था। उस जमाने में बूथ कैप्चरिंग सबसे बड़ी समस्या थी। ईवीएम का विकास शायद इसी बुराई को दूर करने के लिए किये गया था। ईवीएम की खास बात यह है कि इससे बूथ कैप्चरिंग काफी मुश्किल है, क्योंकि एक ईवीएम एक मिनट में सिर्फ 5 वोट ही दर्ज कर सकती है। एक ईवीएम में अधिकतम 2000 वोटों को रिकार्ड किया जा सकता है। और एक ईवीएम में नोटा सहित अधिकतम 64 उम्मीदवारों के नाम अंकित किए जा सकते है। ख़ास बात ये कि ईवीएम को चलाने के लिए बिजली की जरूरत नहीं होती है। यह बैटरी से चलती है। मजे की बात ये है कि ईवीएम लाने वाली कांग्रेस ने ही सबसे पहले इसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाये लेकिन ईवीएम को बदला किसी ने नहीं। ईवीएम पिछले 20 साल में अनेक चुनाव करा चुकी है। ईवीएम प्राय सभी राजनितिक दलों के निशाने पर रही है। ईवीएम पर सबसे बड़ा आरोप है कि उसे हैक किया जा सकता है।

जहाँ तक मुझे याद है कि 19 मई 1982 को परवूर विधानसभा में ईवीएम से चुनाव कराये गए थे। मुकाबला सीपीआई के प्रत्याशी सिवन पिल्लई और कांग्रेस के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एसी जोज़ के बीच था। सीपीआई के सिवन पिल्लई ने कांग्रेस के एसी जोज़ को हरा दिया था। पिल्लई को 30,450 वोट मिले थे, जबकि जोज़ को 30,327। अंतर बहुत कम था। इसके बावजूद कांग्रेस ने ईवीएम पर सवाल उठाए। जोज़ ने हार नहीं मानीं। उन्होंने हाईकोर्ट में याचिका लगाई। जॉज की शिकायत थी कि बिना संसदीय अनुमति के चुनाव आयोग ने इलेक्शन में ईवीएम का इस्तेमाल किया। हालांकि कोर्ट ने जोज़ की याचिका को खारिज कर दिया, पर वो रुके नहीं। मामला सुप्रीम कोर्ट में लेकर गए। सुप्रीम कोर्ट ने परवूर विधानसभा के उन 50 बूथों पर बैलट पेपर के जरिए दोबारा मतदान कराने के आदेश दिए। इतना ही नहीं, दोबारा हुए चुनाव में जोज़ 2 हजार मतों के अंतर से चुनाव भी जीत गए। यानि ईवीएम कोर्ट में हार गयी। सुप्रीम कोर्ट के 1984 में आए आदेश के बाद चुनाव आयोग ने ईवीएम के इस्तेमाल पर फिलहाल रोक लगा दी। हालांकि बाद में संसद ने ईवीएम को वैध बनाने के लिए अपने अधनियम में संशोधन किया और 1998 से विधानसभा और लोकसभा चुनावों से इसका इस्तेमाल किया जाने लगा।

पिछले दो दशकों में देश का ऐसा कोई राजनीतिक दल नहीं है जिसने ईवीएम की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े न किये हो। आज केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा हो,बसपा हो,सपा हो जेडीयू हो सबको ईवीएम संदिग्ध लगती है। हमारे चंबल इलाके में कुछ साल पहले भिंड ज़िले के अटेर में ईवीएम मशीन के डेमो के दौरान किसी भी बटन को दबाने पर वीवीपैट पर्चा भारतीय जनता पार्टी का निकलने के बाद ज़िले के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक को हटा दिया गया था। तब चुनाव आयोग कि और से सफाई दी गयी थी कि मशीनें ठीक से कैलिब्रेट नहीं हो पायी थी। हाल में हुए मप्र विधानसभा चुनाव में इसी अटेर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा सरकार के मंत्री अरविंद भदौरिया चुनाव हारे हैं।

अब स्थिति ये है कि, कांग्रेस को ईवीएम पर भरोसा नहीं है और भाजपा ईवीएम के भरोसे ही देश को कांग्रेस विहीन करने के अभियान में जुटी है। एक तरफ नए सिरे से ईवीएम पर रोक की मांग की जाने लगी है। तर्क दिए जाने लगे हैं कि ईवीएम न सिर्फ हैक हो रही है बल्कि इससे मतदान की गोपनीयता भी भनग हो रही है। मतदाता की जान को खतरा बढ़ रहा है, क्योंकि अब प्रत्याशी को बूथ के हिसाब से मतों की गणना का आंकड़ा मिल रहा है। मतदाता की पहचान आसान हो गई है। मतपत्रों से चुनाव के वक्त ऐसा सम्भव नहीं था क्योंकि सब मतपत्र गड्डमड्ड कर दिए जाते थे। ईवीएम कि अविश्वसनीयता सियासत से निकलकर साहित्य तक पहुँच गयी। शायरों ने लिख डाला -

चुनाव हार गए हम, मशीन जीत गई
लहू में भीगी हुई आस्तीन जीत गई

मुझे लगता है कि, ईवीएम को लेकर देश में एक बार फिर से बवाल होगा। फिर मामला अदालत तक जायेगा। फिर इसे बंद कर पुरानी प्रक्रिया पर लौटने की बात की जाएगी, तर्क दिए जायेंगे, प्रमाण दिए जायेंगे लेकिन नतीजा निकलेगा ढाक के तीन पात जैसा ही। सत्तारूढ़ भाजपा शायद ही ईवीएम को बंद करने पर राजी हो। ये बात सही है कि भारत जैसे विशाल देश कि चुनाव प्रक्रिया की शुचिता और निष्पक्षता को बनाये रखने के लिए हमें ईवीएम के इस्तेमाल पर पुनर्विचार करना चाहिए, क्योंकि इससे लोकतंत्र की पवित्रता का मामला भी बाबस्ता है। बार-बार कहा जाता है कि दुनिया के तमाम बड़े लोकतांत्रिक देशों में मशीन का इस्तेमाल चुनाव में नहीं किया जाता तो भारत में इसकी क्या जरूरत है? भारत में भी अमेरिका कि तरह कागज के मतपत्रों से ही चुनाव होना चाहिए।

राकेश अचल

चुनाव प्रक्रिया से ईवीएम का विस्थापन हालाँकि आसान नहीं है, किन्तु असम्भव भी नहीं है। यदि संसद चाहे तो इस मशीन को अलविदा कह सकती है, लेकिन आज हमारे पास जो संसद है उसमें ऐसा कर पाना शायद नामुमकिन है। क्योंकि अभी मशीन सत्तापक्ष के अनुकूल साबित हो रही है, लगातार हो रही है। मशीन विधानसभा चुनावों में कुछ नतीजे देती है और लोकसभा चुनावों में कुछ और। इससे लगता है कि मशीन का विवेक सरकार के अधीन होता है। अब कांग्रेस समेत तमाम विपक्ष यदि भाजपा कि ही तरह ठान ले कि जैसे जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाई गयी थी उसी तरह इस मशीन को भी हटा दिया जाएगा तो मुमकिन है कि बात बन जाये। अन्यथा जनता हारेगी और मशीन जीतती रहेगी। कोई उसे रोक नहीं सकता। यदि देश में एक राष्ट्र, एक चुनाव हुए तो कहा जाता है कि देश के चुनाव आयोग को लगभग 30 लाख कंट्रोल यूनिट, लगभग 43 लाख बैलेट यूनिट और लगभग 32 लाख वीवीपीएटी की आवश्यकता होगी। लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के लिए लगभग 35 लाख वोटिंग यूनिट (कंट्रोल यूनिट, बैलेट यूनिट और वीवीपीएटी यूनिट) की कमी है। एक साथ चुनाव कराने पर विचार-विमर्श तेज होने के बीच निर्वाचन आयोग ने कुछ महीने पहले विधि आयोग को सूचित किया था कि उसे इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों को रखने के लिए पर्याप्त भंडारण सुविधाओं की भी आवश्यकता होगी।

स्टांप ड्यूटी की चोरी से शासन को करोड़ों का चूना, अपराध दर्ज

मामला: पवन चक्की लगाने के लिए ली गई भूमि की रजिस्ट्री में गड़बड़ी का

माही की गूंज, रतलाम।

धार, रतलाम और उज्जैन जिले में पवन ऊर्जा का कार्य कर रही क्षेमा पावर लिमिटेड कंपनी और उसकी सहायक कंपनियों ने शासकीय अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मिलकर एक प्रतिशत स्टांप ड्यूटी की चोरी कर शासन को करोड़ों का नुकसान पहुंचाया। सप्रमाण यह शिकायत एक पत्रकार ने उज्जैन संभाग के लोकायुक्त एसपी अनिल विश्वकर्मा को शिकायत की थी। इस पर लोकायुक्त टीम ने जांच के दौरान जिला पंजीयन कार्यालय उज्जैन, रतलाम, तहसीलदार रतलाम, बड़नगर और अक्षय ऊर्जा विभाग से विभिन्न जानकारियां प्राप्त की। लोकायुक्त टीम ने अपनी जांच में पाया कि, तीन जिलों में शासन को स्टांप ड्यूटी की चोरी कर चूना लगाया गया। जांच में पाया गया कि बड़नगर तहसील के ग्राम उबराडिया, भिड़ावद, रूनीजा, आमला, जलोद संजर और गजनीखेड़ी में क्षेमा पॉवर कंपनी ने पवन चक्की लगाने के लिए किसानों से भूमि क्रय की। साथ ही पवन चक्की लगाकर एसबीईएसएस कंपनी को भूमि विक्रय की गई। एसबीईएसएस कंपनी को विक्रय के दौरान क्षेमा पॉवर लिमिटेड द्वारा उप पंजीयकों से मिलकर खाली खेत के फोटो लगाकर रजिस्ट्री कराई गई। इस प्रकार पवन चक्की की लागत का एक प्रतिशत स्टांप शुल्क का भुगतान नहीं किया गया और स्टांप शुल्क की चोरी की गई। प्रति पवन चक्की अनुमानित लागत 15.52 करोड़ रुपये आई है जिसका एक प्रतिशत मतलब 15.52 लाख रुपये प्रति पवन चक्की स्टांप शुल्क की चोरी जांच पर से सिद्ध हो गया। इस प्रकार उक्त गांव में पहर लोकेशन पर 15.52 लाख रुपये स्टांप शुल्क कम चुकाया गया जिससे शासन को आर्थिक क्षति पहुंची। अपराधिक कृत्य शासकीय अधिकारी/कर्मचारियों ने प्राइवेट फर्मों और व्यक्तियों के साथ मिलकर कारित किया जाना प्रमाणित पाया गया। जांच के बाद अपराध सिद्ध होने पर उप पंजीयक वाणिज्यिक कर विभाग उज्जैन प्रज्ञा शर्मा, उप पंजीयक वाणिज्यिक कर विभाग उज्जैन राघवेंद्र रघुवंशी, अधिकृत व्यक्ति क्षेमा पॉवर एंड इन्फास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति) अमृतांश मंडलोई, अधिकृत व्यक्ति क्षेमा पॉवर एंड इन्फास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति) आशीष उपाध्याय, दिव्य ज्योति बरुआ, अधिकृत व्यक्ति एसबीईएसएस सर्विसेज प्रोजेक्ट-2 प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), रामचंद्र सिंह, अधिकृत व्यक्ति एसबीईएसएस सर्विसेज प्रोजेक्ट-2 प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), विनोद नायर मैनेजर क्षेमा पॉवर एंड इंफास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), डॉ. एस. बसंत, चेयरमैन एवं एमडी क्षेमा पॉवर एंड इन्फास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति) एवं अन्य के विरूद्ध भारतीय दंड विधान की विभिन्न धाराओं में अपराध क्रमांक 0/257/2023 धारा-7, 13 (1) ए. 13(2) भ्रनिअधि 1988 (संशोधन अधिनियम 2018) एवं 109, 4 एवं 120-(बी) भादंवि के अंतर्गत पंजीबद्ध किया।

दूसरे जिले के भी कारगुजारी पंजीबद्ध

रतलाम जिले के ग्राम बिरमावल, ग्राम उमरथाना, ग्राम मऊ, ग्राम दंतोड़िया आदि में भी प्रत्येक पवन चक्की की लोकेशन पर 15.52 लाख की स्टाम्प शुल्क चोरी किया जाना जांच में पाया गया। इसमें भी रतलाम जिले के उपपंजीयकों एवं क्षेमा पावर लिमिटेड तथा एसबीईएसएस कंपनी के अधिकारियों ओर कर्मचारियों की भूमिका एवं संलिप्तता जांच में पाई गई। उक्त अपराधिक कृत्य शासकीय अधिकारी ओर कर्मचारियों ने प्राइवेट फर्मों एवं व्यक्तियों के साथ मिलकर कारित किया जाना प्रमाणित पाए जाने पर रामचरण मालवीय से निरीक्षक उप पंजीयक वाणिज्यिक कर विभाग रतलाम, प्रसन्ना गुप्ता, उप पंजीयक वाणिज्यिक कर विभाग रतलाम, अमृतांश मंडलोई अधिकृत व्यक्ति क्षेमा पॉवर एंड इन्फास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), आशीष उपाध्याय, अधिकृत व्यक्ति क्षेमा पॉवर एंड इन्फास्ट्रक्चर कंपनी (प्रा. व्यक्ति), नवीन कुमार, अधिकृत व्यक्ति क्षेमा पॉवर एंड इंफास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्रा. व्यक्ति), दिव्य ज्योति बरूआ, अधिकृत व्यक्ति एसबीईएसएस सर्विसेज प्रोजेक्टो-2 प्राइवेट लिमिटेड (प्रा. व्यक्ति), रामचंद्र सिंह, अधिकृत व्यक्ति एसबीईएसएस सर्विसेज प्रोजेक्टो-2 प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), विनोद नायर मैनेजर, क्षेमा पॉवर एंड इंफास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति), डॉ एस बसंत, चेयरमैन एवं एमडी. क्षेमा पावर एंड इंफास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (प्राइवेट व्यक्ति) एवं अन्य के विरूद्ध अपराध क्रमांक 0/247/2023 धारा-7, 13 (1) ए. 13(2) भ्रनिअधि 1988 (संशोधन अधिनियम 2018) एवं 109, 420 एवं 120-(बी) भा.दं.वि. के अंतर्गत पंजीबद्ध किया जाकर विवेचना में लिया गया है।

चुनाव अवैध घोषित, न्यायालय में दी थी चुनौती

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में मल्हारगढ़ जनपद पंचायत की अध्यक्ष पुष्पाबाई पति कन्हैयालाल पाटीदार का निर्वाचन कलेक्टर न्यायालय ने अवैध घोषित किया है। मल्हारगढ़ जनपद पंचायत अध्यक्ष पद के लिए आठ जुलाई 2022 को पुष्पा पाटीदार का निर्वाचन हुआ था। निर्वाचित जनपद सदस्यों द्वारा उन्हें बहुमत से निर्वाचित किया गया था। इस निर्वाचन में प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार संगीताबाई राठौर ने इस निर्वाचन को मप्र पंचायत राज्य अधिनियम की धारा 122 के अंतर्गत कलेक्टर न्यायालय में चुनौती दी।

याचिका में दिए ये तर्क

याचिका में यह कहा गया था कि, पुष्पाबाई पाटीदार ने सक्षम प्राधिकारी को मध्य प्रदेश का जाति प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नहीं किया था। उनका जन्म और शिक्षा ग्राम गादौला जिला प्रतापगढ़ में हुई है। इस कारण वे मध्यप्रदेश में पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित स्थान के लिए निर्वाचित होने के लिए पात्र नहीं है।

जब याचिका का सूचना पत्र जनपद अध्यक्ष पुष्पाबाई को भेजकर जवाब लिया गया तो उन्होंने जवाब में यह बताया कि उनका जन्म और शिक्षा राजस्थान में हुई है, लेकिन शादी के बाद वे मंदसौर जिले के ग्राम बरखेड़ा देवडूंगरी की निवासी हो गई है। वह अब 25 साल से मप्र की निवासी और पिछड़ा वर्ग की हैं।

निर्वाचन शून्य घोषित

याचिकाकर्ता संगीताबाई के अभिभाषक प्रकाश रातड़िया का तर्क था कि, जिस अभ्यर्थी का जन्म मध्यप्रदेश में नहीं हुआ है और मध्यप्रदेश के सक्षम प्राधिकारी का जाति प्रमाण-पत्र नहीं है, उसे आरक्षित पद पर निर्वाचित होने की पात्रता नहीं है। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव ने दस्तावेजों एवं तर्कों पर विचार के बाद पारित अपने निर्णय द्वारा जनपद पंचायत मल्हारगढ़ की निर्वाचित अध्यक्ष पुष्पाबाई पाटीदार का चुनाव अवैध और शून्य घोषित कर पद रिक्त घोषित कर दिया।

कलेक्टर ने पाया कि, आरक्षित पद पर निर्वाचित होने के लिए अभ्यर्थी का आरक्षित वर्ग का होना एवं तत्संबंधी प्रमाण पत्र प्रस्तुत होना आवश्यक है।

आर्य रक्षित सूरिधाम पर प्रतिष्ठा हेतु अशोकसागरसूरिश्वरजी का नगर में हुआ आगमन

माही की गूंज, मंदसौर।

9 से 16 दिसम्बर तक चन्द्रपुरा मेन रोड़ पर स्थित आर्यरक्षित सूरि धाम में मंदिरजी की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम होने जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत मंदसौर नगर में जैन साधु-साध्वियों का आगमन प्रारंभ हो गया है।

9 दिसम्बर को आर्यरक्षित सूरि सहित विभिन्न देवी देवताओं की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा होगी। 16 दिसम्बर को मंदिरजी के द्वारोद्घाटन से प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न होगा। आचार्य श्री अशोकसागरसूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा व निश्रा में यह सभी कार्यक्रम आयोजित होंगे। इस प्रतिष्ठा समारोह में कई जैन आचार्य व जैन साध्वियों की पावन निश्रा में आर्यरक्षित सूरि धाम जैन तीर्थ ट्रस्ट को प्राप्त होगी। मंगलवार को इसी प्रतिष्ठा समारोह में निमित्त आचार्य श्री अशोक सागर सूरिश्वरजी म.सा. का कई जैन संतों सहित मंदसौर नगर में आगमन हुआ।

इस अवसर पर आचार्य श्री प्रसन्नचन्द्रसागरजी म.सा. ने भी चल समारोह में सहभागिता की। आचार्य श्री व जैन संतों की मंदसौर नगरवासियों व आर्यरक्षित सूरि धाम तीर्थ ट्रस्ट के द्वारा रेल्वे स्टेशन रोड़ स्थित प्रेम कॉलोनी में हेमलता चन्द्रकुमार संघवी परिवार के निवास स्थान पर आगवानी की गई। आचार्य श्री अशोकसागरजी सूरिश्वरजी म.सा. ने रूपचांद आराधना में आयोजित धर्मसभा में कहा कि मंदसौर नगर मे आर्यरक्षित सूरि धाम तीर्थ की स्थापना होना गर्व की बात है। आचार्य आर्यरक्षितसूरिजी का जन्म मंदसौर में हुआ था और उन्होने जैन धर्म की प्रभावना में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

मौसम का सेहत पर असर, सर्दी-खांसी, बुखार के मरीजों की अस्पताल में लग रही भीड़

माही की गूंज, मंदसौर।

मौसम में हुए बदलाव का असर अब लोगों के स्वास्थ्य पर हो रहा है। सुबह-शाम व दोपहर में भी ठंड का असर, ठंडी हवाएं, बादल छाए रहने के कारण सर्दी, खांसी, जुकाम, बुखार के मरीज बढ़ रहे हैं।जिला अस्पताल की ओपीडी में प्रतिदिन 500 से अधिक मरीज पहुंच रहे हैं। चिकित्सकों के अनुसार मौसम खराब होने के कारण लोग सर्दी, खांसी, बुखार के मरीज बढ़ रहे हैं। धूप नहीं होने के कारण भी लोगों की सेहत पर पड़ रहा है।

पिछले करीब एक सप्ताह से आकाश में बादल छाए हुए हैं। बूंदाबांदी भी हो रही है। मौसम में हुए इस बदलाव का असर लोगों की सेहत पर पड़ रहा है। जिला अस्पताल की ओपीडी में सुबह से शाम तक मरीजों की भीड़ नजर आ रही है। मरीजों की कतार लग रही है। मौसम में बदलाव के कारण सर्दी-जुकाम, खांसी, उल्टी के साथ-साथ पेट दर्द, बुखार के मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है।

ओपीडी में एक एक सप्ताह पहले तक मरीजों

की संख्या कम थी। 28 नवंबर के बाद से ही मरीजों की संख्या बढ़ गई है। सबसे ज्यादा मरीज बुखार के पीड़ित थे। चिकित्सकों ने बताया कि, मौसम में हुए बदलाव के साथ बूंदाबांदी, ठंडी हवाओं के कारण सर्दी-जुकाम, बुखार के मरीज बढ़े हैं। डाक्टरों ने बताया कि इस समय मौसम में बदलाव से मरीजों की संख्या बढ़ी है। सबसे ज्यादा मरीज वायरल फीवर के आ रहे हैं। मरीजों की संख्या अधिक होने के कारण जिला अस्पताल की ओपीडी में सुबह से ही भीड़ लग रही है।

इसके साथ ही निजी अस्पतालों में भी बड़ी संख्या में मरीज पहुंच रहे है। सिविल सर्जन डा. डीके शर्मा ने बताया की मौसम में बदलाव के दौरान खानपान व रहन-सहन पर ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है। ठंड का असर भी बढ़ रहा है, ठंड से बचाव करें।

आकाश में बादलों का डेरा, दिनभर ठंड का असर

मंदसौर में 26 नवंबर के बाद से ही मौसम बदला हुआ है। 26 नवंबर के बाद से ही बादल छाए हुए है। 29 नवंबर से ही सुबह कोहरा भी छा रहा है। सुबह 9 बजे तक कोहरा छा रहा है। इसके साथ ही दिनभर ठंडी हवाएं भी चल रही हैं। आकाश में घने बादल होने के कारण सूर्य भी नहीं दिख रहा है। मौसम में हुए बदलाव का असर जनजीवन के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इसके कारण अस्पतालों में मरीजों की भीड़ रही है। पांच दिनों बाद मंगलवार दोपहर साढ़े 3 बजे आकाश से बादल छटे और धूप नजर आई जो बुधवार को भी कुछ समय ले लिए निकली थी।

करणी सेना प्रमुख गोगामेड़ी की हत्या से आक्रोशित सैनिकों ने किया हाईवे जाम

माही की गूंज, शाजापुर।

जिला मुख्यालय से निकले नेशनल हाईवे पर सैकड़ों की तादाद में पहुंचे करणी सैनिकों ने नेशनल हाईवे जामकर हत्या करने वाले आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने की मांग कर रहे थे। जिसकी सूचना मिलते ही शाजापुर कोतवाली पुलिस और लालघाटी पुलिस मौका स्थल बड़ी संख्या में पहुंची और करणी सैनिकों से चर्चा कर नेशनल हाईवे को सुचारू रूप से शुरू करवाया।

प्रशासन के आश्वासन के बाद खुला जाम

वहीं बाद में करणी सैनिकों ने एक शिकायती ज्ञापन प्रशासन को सौपा है और उसमें मांग की गई है कि जिन लोगों ने करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेडी की हत्या की है, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करें और उन्हें फांसी पर लटकाए। प्रशासन के आश्वासन के बाद करणी सैनिक नेशनल हाईवे से हटे और सुचारू रूप से नेशनल हाईवे को शुरू करवाया गया। साथ ही करणी सेना के एक कार्यकर्ता ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि अगर प्रशासन आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई नहीं करती है तो अभी सिर्फ राजस्थान पूरी तरह से बंद हुआ है। बाद में पूरे भारत के करणी सैनिक सड़क पर उतरेंगे और पूरे भारत को बंद करेंगे।

मावठे की बारिश के बाद खेतों में खड़ी फसलें लहलहा उठी

माही की गूंज, शाजापुर।

मावठे की बारिश होने से किसानों के चेहरे खिले-खिले नजर आए। अब एक सप्ताह के बाद खिली धूप से गेहूं एवं दलहनी फसलें लहलहाने लगी हैं। गेहूं, सरसों, मसूर के लिए यह मावठे की बारिश मानो किसानों की मन मांगी मुराद की पूरी करने वाली साबित हुई। क्षेत्र में शनिवार और रविवार को थोड़े समय के लिए हल्की धूप देखने को मिली।

इस दौरान किसानों के चेहरे खिले हुए नजर आए। मौसम में भी ठंडक खुल गई है। किसानों का कहना है कि, मावठ की वर्षा रबी फसलों के लिए फायदेमंद होगी। मौसम में बदलाव के बाद दिनभर जलेबी, गराड़ू, चाय, काफी की दुकानों पर शौकीनों की भीड़ लगी रही। मतगणना के एक दिन पहले सभी गप्पे लड़ाते हुए व्यंजनों का लुत्फ उठाते रहे।

बारिश किसानों के लिए अमृत समान

सिंचाई की व्यवस्था करने में जुटे किसानों को पानी का इंतजार था और मौसम ने भी साथ दिया। इसके चलते अंचल के सैकड़ों गांव में नवंबर माह में हुई गेहूं की बोवनी वाली खड़ी फसल को बारिश सिंचाई का पानी करने वाली साबित हुई तो अंचल में बोई गई गेहूं की फसल को बारिश से मिल गया।

जिले के अन्य तहसील का भी यही हाल रहा, जहां कुदरत की मेहरबानी से किसानों के चेहरे खिल उठे हैं और खेतों में खड़ी फसलें खिलखिला कर तैयार हो रही हैं। दुपाड़ा गांव के किसान जीतमल, सीताराम ठाकुर, लखनलाल वर्मा आदि ने बताया कि मावठे की बारिश किसानों की उम्मीद के मुताबिक फसलों के लिए अमृत के समान साबित हुई। जिसका फायदा पूरे कृषि क्षेत्र की फसलों के लिए हुआ है।

खरपतवार नाशक दवाइयों का कर रहे छिड़काव

वर्तमान में खरपतवार नाशक दवाइयों का छिड़काव किया जा रहा है। किसान अभी सिंचाई कार्य में व्यस्त थे। अब कुछ दिनों सिंचाई कार्य बंद है। क्षेत्र में बादल छाने के बाद थोड़ी धूप भी निकली। किसान जयसिंह वर्मा ने बताया कि मावठे की बारिश से रबी सीजन की गेहूं, चना की फसल में फायदा होगा। मटर फली में नुकसान होगा। वर्तमान समय में मटर पककर तैयार खड़ी है। किसान फली तोड़कर मंडी में बेचने पहुंच रहे हैं। गेहूं, चना की फसल खेतों में लहलहा रही है।

शीत लहर और कोहरे से दहलनी फसलों में खतरा

इस मावठे की बारिश से अंचल में गेहूं सहित अन्य फसल को पानी तो मिल गया है लेकिन मौसम का मिजाज किसानों के लिए थोडा चिंता का सबब बना हुआ है। अंचल में मावठे की बारिश ने गेहूं की फसल के लिए पौष्टिकता का काम किया है, वहीं अंचल में दलहन फसल के लिए मौसम का मिजाज किसानों के लिए थोड़ा चिंता का सबब बना हुआ है। शीतलहर चल रही है और सुबह कोहरे की मार देर तक मौसम में बनी हुई है, जिससे चना, मसूर, बटरी जैसी दलहन फसलों में पाला पड़ने की आशंका से किसान घिर चुके हैं।

किसानों ने बताया कि, अब तक तो मौसम का मिजाज रबी फसल के लिए उपयुक्त चल रहा है लेकिन कोहरे शीतलहर से पाले की स्थिति से इंकार नहीं किया जा सकता है। फसलों को पानी लगने की वजह से अभी तक के मौसम से पाले जैसी संभावना तो नहीं बनी लेकिन किसानों को पाले से बचने के उपाय सुझाव किसानों तक पहुंचाने में लगा है और पाले के बचाव की सतर्कता पर ध्यान बनाने की सलाह दी जा रही है।

फसलों के लिए अमृत है यह बारिश

मावठे की बारिश से अभी कोई नुकसान नहीं है, इससे फसलों को बहुत फायदा होगा। फसलों में पानी गिरने की वजह से अभी तक मौसम से पाले जैसी ज्यादा संभावनाएं तो नहीं बनी है। मटर और टमाटर में फफूंद की शिकायत हो सकती है तो फफूंद नाशक दवाई का छिड़काव कर सकते हैं। आलू के लिए परेशानी हो सकती है।

पल्स पोलियो अभियान की तैयारी समय पर पूर्ण करें- कलेक्टर

माही की गूंज, मंदसौर। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव की अध्यक्षता में पल्स पोलियो अभियान एवं जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक सुशासन भवन स्थित सभागृह में आयोजित की गई।

बैठक के दौरान कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग को निर्देश देते हुए कहा कि पल्स पोलियो अभियान की आवश्यक तैयारियां समय पर पूर्ण करें।

कलेक्टर ने कहा कि, 0 से 5 वर्ष तक के सभी बच्चों को 10 दिसंबर के दिन अनिवार्य रूप से दवा पिलाएं, कोई भी बच्चा ना छूटे। इस बात का सर्वे भी करें इसके साथ ही बच्चों का नाम उनके माता-पिता के मोबाइल नंबर की सूची भी प्रेषित करें। जिससे क्रॉस वेरिफिकेशन किया जा सके। छोटे बच्चों में बढ़ रहे वायरल संक्रमण को ध्यान में रखते हुए फीवर क्लिनिक को भी सक्रिय किया जाए। बच्चों के स्वास्थ्य का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाए। बैठक के दौरान सीईओ जिला पंचायत कुमार सत्यम, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, सिविल सर्जन, महिला बाल विकास अधिकारी सहित स्वास्थ्य विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग से जुड़े कर्मचारी मौजूद थे।

भाजपा - कांग्रेस दोनों ने मनाया जश्न

3-3 पर मुकाबला बराबर

माही की गूंज, खरगोन।
ब्रजभूषण दसौंदी

मध्यप्रदेश में भले ही भाजपा की सुनामी में जिलों में दिग्गजों सहित कांग्रेस का सफाया हो गया हो लेकिन खरगोन जिले में वो तीन सीटों पर काबिज हो गई। यहां भाजपा और कांग्रेस में मुकाबला 3-3 पर बराबर रहा। दिलचस्प ये रहा कि, कांग्रेस के युवा नेता जीत गए लेकिन दिग्गज अपनी परंपरागत सीट भी नहीं बचा पाए।

कांग्रेस कसरावद, भगवानपुरा, भीकनगांव तीन विधानसभा क्षेत्र में जीत हासिल करने में कामयाब रही। भाजपा को खरगोन, महेश्वर और बड़वाह में जीत हासिल हुई। लेकिन कांग्रेस की दिग्गज नेता पूर्व मंत्री डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ महेश्वर, कांग्रेस विधायक प्रदेश कांग्रेस के पूर्व संगठन प्रभारी महासचिव रवि जोशी की खरगोन से करारी हार हुई।

3-3 पर मुकाबला बराबर

2018 के विधानसभा चुनाव में जिले के 6 विधानसभा क्षेत्र में भाजपा का पूरी तरह सफाया हो गया था। खरगोन में तीन-तीन की बराबरी के बाद भाजपा सहित कांग्रेस दोनों ने खूब जश्न मनाया। भाजपा के लिये मोदी के मन में एमपी और सीएम शिवराजसिंह चौहान की लाडली बहना योजना मास्टर स्ट्रोक रही। कसरावद से सचिन यादव, भगवानपुरा से केदार डाबर और भीकनगांव से झूमा सोलंकी की जीत कांग्रेस की प्रतिष्ठा बचाने वाली और व्यक्तिगत जीत रही।

जनता तक नहीं पहुंच पायी कांग्रेस की बात

पूर्व मंत्री सचिन यादव ने माना कांग्रेस का वचन पत्र जनता के बीच नहीं पहुंच पाया। सचिन यादव ने जनादेश का सम्मान करते हुए बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व को बधाई दी। खरगोन विधानसभा क्षेत्र से पूर्व मंत्री बालकृष्ण पाटीदार से चुनाव हारने वाले रवि जोशी का कहना था चुनाव परिणाम आशा के अनरूप नहीं आए, हम समीक्षा करेंगे।

चुनाव परिणाम पर एक नजर...

- भीकनगांव विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की झूमा सोलंकी ने भाजपा की नंदा ब्रहाम्णे को 603 वोट से हराया।
- बड़वाह से भाजपा के सचिन बिरला ने कांग्रेस के नरेन्द्र पटेल को 5 हजार 499 वोट से पराजित किया।
- महेश्वर से भाजपा के राजकुमार मेव ने कांग्रेस की प्रत्याशी डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ (पूर्व मंत्री) को 5 हजार 919 वोट से शिकस्त दी।
- कसरावद से कांग्रेस के सचिन यादव (पूर्व मंत्री) ने भाजपा के आत्माराम पटेल को 5 हजार 672 वोट से पराजित किया।
- खरगोन से भाजपा के बालकृष्ण पाटीदार (पूर्व मंत्री) ने कांग्रेस के रवि जोशी को 13 हजार 765 वोट से हराया।
- भगवानपुरा से कांग्रेस के केदार डावर ने भाजपा के चन्दर सिंह वास्कले को 12 हजार 167 से पराजित किया।

तीन सीटों पर कांग्रेस और एक विधानसभा पर भाजपा विजयी

माही की गूंज, बड़वानी।

विधानसभा चुनाव 2023 में जिले की चार विधानसभा सीटो में से कांग्रेस ने तीन सीटो पर एवं भाजपा ने एक सीट पर विजय प्राप्त की है। कांग्रेस सेंधवा सीट 1677 मतों से, बड़वानी 11 हजार 172 मतो से, राजपुर सीट 890 मतो से तथा भाजपा ने पानसेमल सीट 13 हजार 442 मतो से जीती है।

जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. राहुल फटिंग से प्राप्त जानकारी अनुसार विधानसभा सेंधवा में डाले गए कुल 2 लाख 19 हजार 897 मतो में से कांग्रेस के ग्रीष्म कुमार मोंटू सोलंकी को एक लाख 6 हजार 136 मत, भाजपा के अंतरसिंह आर्य को एक लाख 4 हजार 459 मत, आम समाज पार्टी के इंजीनियर नानसिंह नावड़े को 4 हजार 155 मत तथा 5 हजार 98 मत नोटा को प्राप्त हुए है। कुल मतों में से 49 डाक मतपत्र निरस्त हुए हैं।

विधानसभा राजपुर में डाले गए कुल 2 लाख 10 हजार 184 मतों में से कांग्रेस के बालाराम बच्चन को एक लाख 333 मत, भाजपा के अंतरसिंह पटेल को 99 हजार 443 मत, बहुजन समाज पार्टी के अनिल दयाराम बड़ोले को एक हजार 846 मत, जनहित किसान पार्टी के जानी करण को एक हजार 236 मत, भारत आदिवासी पार्टी के रविन्द्र विजय चौहान को 576 मत, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया के कामरेड सुखलाल गोरे को एक हजार 723 मत, निर्दलीय आनंद निगवाल को 855 मत, निर्दलीय नर्मदेहर को एक हजार 168 मत, निर्दलीय सुनिल सोलंकी को एक हजार 243 मत तथा एक हजार 683 मत नोटा को प्राप्त हुए है। कुल मतों में से 78 डाक मतपत्र निरस्त हुए हैं।

विधानसभा पानसेमल में डाले गए कुल एक लाख 99 हजार 953 मतों में से भाजपा के श्याम बरडे को 97 हजार 181 मत, कांग्रेस की चन्द्रभागा किराड़े को 83 हजार 739 मत, आम आदमी पार्टी के दयाराम जामसिंह डावर को 2 हजार 409 मत तथा निर्दलीय रमेश चौहान को 12 हजार 950 मत तथा 3 हजार 521 मत नोटा को प्राप्त हुए है। इन कुल मतों में से 149 मत निरस्त तथा 4 निविदत्त मत है।

विधानसभा बड़वानी में डाले गए कुल 2 लाख एक हजार 472 मतो में से कांग्रेस के राजन मण्डलोई को के लाख एक हजार 197 मत, भाजपा के प्रेमसिंह पटेल को 90 हजार 25 मत, भारत आदिवासी पार्टी के दीपक देवीसिंग सेंगर को 2 हजार 206 मत, निर्दलीय करण बर्मन को 840 मत, निर्दलीय पाण्डू सोलंकी को एक हजार 96, निर्दलीय संदीप नरगांवे को 2 हजार 190 मत तथा नोटा को 3 हजार 717 मत प्राप्त हुए है। कुल मतों में से 201 मत निरस्त हुए हैं।

ड्राइवर की छुट्टी के कारण डॉक्टर चला रहा था एंबुलेंस, गर्भवती समेत नहर में गिरी गाड़ी

माही की गूंज, खरगोन।

जिले में एक दर्दनाक घटना सामने आई है। जहां एक तेज रफ्तार एंबुलेंस गर्भवती महिला समेत नहर में जा गिरी। इस हादसे में गर्भवती महिला, उसका पति और परिजन घायल हो गए और डॉक्टर की मौत हो गई। यह हादसा उस समय हुआ जब डॉक्टर पीपरीखेडा गांव से महिला की डिलेवरी कराने देर रात बेड़िया अस्पताल जा रहा था। एंबुलेंस ड्राइवर की छुट्टी थी, जिसकी वजह से डॉक्टर खुद ही एंबुलेंस चलाकर गर्भवती महिला को अस्पताल ले जा रहा था। रात में अचानक तेज रफ्तार एंबुलेंस का संतुलन बिगड़ा और इंदिरा सागर नहर में जा गिरी। 26 वर्षीय डॉक्टर महेंद्र डांगी की मौके पर ही मौत हो गई।

तेज रफ्तार एंबुलेंस नहर में गिरी

वहीं इस हादसे में गर्भवती महिला घायल हो गई। जिसे खरगोन जिला अस्पताल के ट्रामा वार्ड में भर्ती किया गया है। घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस प्रशासन को इसकी जानकारी दी। इसके बाद सभी को नहर से बाहर निकाला। लेकिन तब तक डॉक्टर की मौत हो चुकी थी।

डॉक्टर की मौत, गर्भवती महिला समेत तीन घायल

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहा हैं। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आखिर यह हादसा कैसे हुआ। मृतक डॉक्टर के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

लाखों रुपए की शराब पर चला जिला प्रशासन का बुलडोजर

माही की गूंज, बड़वानी।

जिले के अंजड में जिला प्रशासन ने लाखों रुपए कीमत की जब्त की गई देशी, विदेशी और कच्ची शराब पर बुलडोजर चलवा दिया। जिला कलेक्टर न्यायालय के नष्टीकरण के आदेश के बाद इस पूरी कार्रवाई को जिले की आबकारी विभाग के साथ ही अंजड़ नगर पंचायत की टीम के द्वारा अंजड़ के ट्रैचिंग ग्राउंड पर अंजाम दिया गया। जिसमें शराब की जब्तशुदा बोतलों को जेसीबी की मदद से नष्ट कर दिया गया।

इस कार्रवाई में सालों से न्यायालयीन प्रक्रिया के चलते पुराने लंबित एक हजार 872 प्रकरणों में जब्त की गई देशी शराब कुल 7 हजार 20 लीटर, अंग्रेजी शराब 3 हजार 525 लीटर और हाथ भट्टियों से बनी कच्ची शराब 5 हजार 196 लीटर सहित करीब 1 लाख 12 हजार 268 लीटर महुआ लहान के सैंपल का नष्टीकरण किया गया है। बड़वानी जिला कलेक्टर राहुल फटिंग के न्यायालय के आदेश पर गठित कमेटी में एडीएम केएस मालवीय, जिला आबकारी अधिकारी आरसी बारोड, एडीओ जीएस धुंध के साथ ही जिले भर के आबकारी विभाग के अमले की मौजूदगी में यह नष्टीकरण करने की कार्रवाई की गई।

जिले के पांच सर्किलों से जब्त हुआ था माल

वहीं दिनभर चली इस पूरी कार्रवाई को लेकर बड़वानी आबकारी विभाग के सहायक आयुक्त जीएस धुंध ने बताया कि, ऐसे प्रकरण जो कोर्ट से और कलेक्टर न्यायालय से निराकृत हो गए हैं, उनके जब्तशुदा माल पर कलेक्टर न्यायालय के आदेश अनुसार नष्टीकरण की कार्रवाई की गई है। यह सारे सैंपल जिले के जो पांच सर्कल अंजड़, बड़वानी, खेतिया, राजपुर और सेंधवा है, जहां के न्यायालय द्वारा प्रकरणों के निराकरण के बाद जो मुद्दे माल नष्टीकरण के लिए सुपुर्द किया गया था, उसको आज नष्ट किया गया है।

दो संतों का मिलन, दादा गुरु ने सियाराम बाबा के साथ किया रामायण पाठ

माही की गूंज, खरगोन।

तीर्थनगरी ओंकारेश्वर से पुण्य सलिला मां नर्मदा को प्रदूषण मुक्त करने के उद्देश्य को लेकर संत एवं नर्मदा भक्त दादा गुरु ने सोमवार से नर्मदा सेवा परिक्रमा यात्रा के द्वितीय चरण का श्रीगणेश किया है। जयघोष के साथ शुरू हुई यात्रा में भक्त भजन-कीर्तन करते हुए आगे बढ़ रहे थे। मंगलवार को यात्रा तेली भट्याण पहुंची, जहां दादा गुरु ने निमाड़ के प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा के दर्शन कर रामायण पाठ भी किया।

मलगांव के खेत में चलाया बक्खर

यात्रा के दौरान दोपहर करीब ढाई बजे दादा गुरु मलगांव के एक खेत पहुंचे। यहां बक्खर चला रहे किसान के साथ उन्होंने करीब दस मिनट तक बक्खर चलाया। उनके चल रहे नर्मदा भक्त वेदांश तिवारी ने बताया कि, दादा गुरु गत तीन वर्षों से भी अधिक समय से निराहार रहकर केवल नर्मदा जल पर निर्भर हैं।

नर्मदा साक्षात भवानी का स्वरूप

दादा गुरु का कहना है कि, नर्मदा साक्षात भवानी का स्वरूप है। नर्मदा हमारे जीवन का आधार है। नर्मदा और पावन तटों को प्रदूषण से बचाना हम सबका परम कर्तव्य है। दादा गुरु नर्मदा परिक्रमा यात्रा के माध्यम से देशवासियों को नदियों, पर्वतों, जंगलों और गाय को बचाने का संदेश दे रहे हैं। दादा गुरु ने यमुना परिक्रमा, पद यात्रा भी की है।

कलेक्टर ने जिले के विकास पर पत्रकारों से की चर्चा

माही की गूंज, खरगोन। कलेक्टर कर्मवीर शर्मा ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में पत्रकारों से खरगोन जिले के विकास पर चर्चा की और उनके सुझावों को सुना। इस दौरान उन्होंने विधानसभा निर्वाचन-2023 शांतिपूर्वक संपन्न कराने में मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया और कहा कि जिले के विकास के संबंध में पत्रकारों द्वारा जो समस्याएं एवं सुझाव बताएं गए हैं उन पर कार्यवाही की जाएगी। बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी जेएस बघेल एवं एसडीएम भास्कर गाचले भी उपस्थित थे। कलेक्टर शर्मा से चर्चा के दौरान पत्रकारों ने खरगोन शहर में तिलक पथ पर लगाए जा रहे अंडे एवं मांस के ठेलों को रोकने की आवश्यकता बताई। खरगोन शहर की यातायात व्यवस्था में सुधार के लिए विभिन्न स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था बनाएं एवं पार्किंग स्थलों पर अतिक्रमण कर बनाई गई दुकानों को हटाने की आवश्यकता बताई। खरगोन नगर में बिस्टान रोड़ पर आवंटित जमीन पर ट्रांसपोर्ट नगर विकसित किए जाने की बात कही गई।

पत्रकारों द्वारा बताया गया कि, जिला चिकित्सालय की सफाई व्यवस्था में सुधार किये जाने की आवश्यकता हैं। कुंदा नदी की सफाई की जाना चाहिए। इसके लिए अभियान चलाने की जरूरत है। शहर की आवासीय कॉलोनियों में व्यवसायिक दुकानें संचालित की जा रही है इस पर रोक लगाने की आवश्यकता है। खरगोन शहर की ड्रेनेज व्यवस्था ठीक से काम नहीं कर रही है इस पर सुधार की आवश्यकता है। शहर के नालो की सफाई ध्यान देने की जरूरत है। खरगोन नगर पालिका की जलावर्धन योजना का कार्य अधूरा है इसे शीघ्र पूरा करने के प्रयास होना चाहिए। खरगोन नगर के लिए बाय पास की आवश्यकता है इसके लिए शीघ्र कार्यवाही की जानी चाहिए। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम द्वारा खाद्य सामग्री विक्रय करने वाले प्रतिष्ठानों की नियमित रूप से जांच होना चाहिए। मेडिकल स्टोर्स से बिना पर्ची की दवाईयां विक्रय की जाती है इस पर रोक लगाने की आवश्यकता है। बैठक में पत्रकारों द्वारा शांति समिति के पुनर्गठन की आवश्यकता बताई गई।

अश्लील व्यवाहर करने के आरोप में आरोपी को 5 वर्ष की जेल एंव 2 हजार रूपए के जुर्माने से दण्डित

माही की गूंज, बड़वानी। विशेष न्यायालय (पाक्सो) बडवानी श्रीमती सारिका गिरी शर्मा ने पारित अपने फैसले मे नाबालिक पीड़िता के साथ दुष्कर्म करने के आरोप मे आरोपी शिक्षक थाना सेंधवा ग्रामीण को धारा 9एफ/10 पाक्सो एक्ट में 05 वर्ष, धारा 11/12 पाक्सो एक्ट, धारा 354क(1);पद्ध एवं 509 भादवि में 01-01 का कठोर कारावास एवं कुल 2 हजार रूपये अर्थदण्ड से दण्डित किया है। अभियोजन की ओर से पैरवी अतिरिक्त जिला अभियोजन अधिकारी बडवानी दुष्यंतसिंह रावत द्वारा की गई। मीडिया प्रभारी कीर्ति चौहान सहायक जिला अभियोजन अधिकारी ने बताया कि आरोपी शिक्षक द्वारा स्कूल की नाबालिग बच्चियों के साथ छेडछाड की जाती थी एवं बच्चियों को गलत तरीके से छूआ जाता था तथा आरोपी बच्चियों को गलत कमेंट कर अश्लील इशारा करता था एवं स्कूल के लडके एवं लडकीयो के नाम लिखकर आपस में जोडता था। आरोपी शिक्षक बालिकाओ के उपर चाक फेककर मारता था, जिसके संबंध में स्कूल की बालिकाओ द्वारा स्कूल के प्राचार्य को शिकायत की गई। स्कूल प्राचार्य द्वारा थाने में प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखबद्ध कराइ गई। पुलिस ने प्रकरण की विवेचना पूर्ण कर न्यायालय के समक्ष अभियोग पत्र प्रस्तुत किया।

बेबाकी के साथ...सच
माही की गूंज
एजेंसी देना है
झाबुआ जिले में: रंभापुर, मदरानी, झकनावदा, खवासा, राणापुर
अलीराजपुर जिले में: सौंडवा, कट्ठीवाड़ा, छकतला, चांदपुर, बोरी
संपर्क - 9589882798, 9981318651

उत्साहपूर्वक मनाया कृषि विज्ञान केन्द्र पर विश्व मृदा स्वास्थय दिवस

माही की गूंज, बड़वानी।

कृषि विज्ञान केन्द्र बड़वानी के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एसके बड़ोदिया के मार्गदर्षन में 5 दिसम्बर 2023 को विष्व मृदा स्वास्थय दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम डॉ. बड़ोदिया ने सभी छात्र-छात्राओं, कृषकों का स्वागत करते हुए कहा कि रासायनिक खादों और कीटनाषी दवाईयों के लगातार उपयोग करने से मिट्टी के जैविक गुणों में कमी आ रही है। साथ ही जलवायु परिर्वतन के प्रभाव से भी मृदा की उर्वराशक्ति प्रभावित हो रही है। आज के समय में सभीं कृषकों को अपने खेत की मिट्टी का मृदा स्वास्थय पत्रक तैयार कराना चाहियें। मृदा स्वास्थय पत्रक में मिट्टी का पीएच मान, विद्युत चालकता अम्लीयता, क्षारीयता, जैविक कार्बन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाष के अलावा कापर, जिंक, मैगनीज, सल्फर, तांबा, लोहा, बोरान सूक्ष्म तत्वों की जानकारी व इनकी आपूर्ति हेतु अनुषंसित मात्रा की सलाह दी जाती है। अनुषंसा के आधार पर ही उर्वरकों का प्रबंधन करना चाहियें, असंतुलित रूप से उर्वरकों के उपयोग से भी मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो रही है । मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिये प्राकृतिक/जैविक खेती अपनाना आवष्यक है। केन्द्र के उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. डीके जैन ने मृदा दिवस के अवसर पर उद्यानिकी फसलों हेतु आवष्यक मृदा की जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ कुमरावत वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) द्वारा विष्व मृदा दिवस के मनाये जाने के महत्व पर प्रकाष डालते हुए पावर पाईटं प्रजेन्टेषन के माध्यम से मृदा के सुक्ष्म पोषक तत्वों की विस्तृत जानकारी देते हुए अपने प्रक्षेत्र की मिट्टी की जांच करवा कर मृदा स्वास्थय पत्रक में अनुषंसा के आधार पर खेती की सलाह दी। मौसम वैज्ञानिक रविन्द्र सिकरवार ने मौसम आधारित कृषि को अपनाने की सलाह दी। इस अवसर पर एक प्रष्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें उपस्थित छात्र-छात्राओं ने कृषि एवं सामान्य जानकारी से संबधित प्रष्नों के जवाब उत्साहपूर्वक दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित कृषकों, अ़द्वंयोदय महाविद्यालय मनावर से छात्र-छात्राओ, रॉवे छात्राओं एवं केवीके के अधिकारी/कर्मचारी द्वारा मृदा स्वास्थय जागरूकता रैली निकाली गयी । जिसमें केन्द्र से समीपस्थ ग्राम तलून तक सभी पकि्तबद्ध नारे लगाकर रैली के माध्यम से मृदा स्वास्थय के प्रति सभी को जागरूक किया। इस कार्यकम को सफलतापूर्वक आयोजन में रिलांयस फाउण्डेषन बड़वानी, नीति आयोग-सुनहरा कल संस्था बड़वानी एवं केन्द्र के तकनीकी अधिकारी श्री यूएस अवास्या, लेखापाल रंजीत बारा व बीएम कृषि महाविद्यालय खंडवा की रॉवे कॉर्यक्रम अन्तर्गत आई छात्राओं का योगदान रहा। इस अवसर पर अ़द्वंयोदय महाविद्यालय मनावर से अजय वाघे कृषि विभाग बड़वानी की आत्मा परियोजना से अंतिम दीक्षित एवं नारायण पाटीदार एवं रिलायंस फाउण्डेषन बड़वानी से नीति आयोग सीपा-सुनहरा कल संस्था बड़वानी व प्रगतिषील कृषकों ने भागीदारी की।

जिले में एक और रेलवे स्टेशन का हुआ लोकार्पण

माही की गूंज, जोबट।

पश्चिम रेलवे द्वारा अलीराजपुर-जोबट के नवनिर्मित रेलखंड पर यात्री ट्रेनों की शुरुआत की गई है। वडोदरा के प्रतापनगर स्टेशन से अलीराजपुर के बीच चलने वाली ट्रेन न. 09119 (मूल ट्रेन न. 59123) व ट्रेन न 09120 (मूल ट्रेन न. 59124) को जोबट तक विस्तारित किया गया है। झाबुआ-रतलाम संसदीय क्षेत्र सांसद गुमान सिंह डामोर ने जोबट स्टेशन से इस विस्तारित ट्रेन को (प्रस्थान संकेत) हरी झंडी दिखाकर प्रस्थान कराया। इस प्रकार अब वडोदरा से जोबट तक सीधी रेल सेवा की शुरुआत हो गई है।

इस अवसर पर सांसद डामोर ने जोबट रेलवे स्टेशन का अवलोकन किया। कार्यक्रम में रेलवे के सीपीएम गतिशक्ति मुकेश कुमार ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए स्वागत उद्बोधन दिया तथा जोबट से प्रतापनगर संचालित होने वाली ट्रेन की समय सारणी की जानकारी दी। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य मांगीलाल चौहान, भाजपा जिलाध्यक्ष मकू परवाल, विशाल रावत, जयपाल खरत, इंदरसिंह चौहान सहित अन्य गणमान्यजन एवं बडी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

प्रतिदिन चलने वाली इस विस्तारित ट्रेन का विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

ट्रेन नं. 09119 (मूल ट्रेन न 59123) प्रतापनगर - जोबट अनरिजर्व स्पेशल दिनांक 05 दिसंबर से प्रतापनगर से जोबट के लिए चलेगी। यह ट्रेन प्रतिदिन 09.05 बजे प्रतापनगर से चलकर 13.20 बजे जोबट पहुंचेगी।

ट्रेन न. 09120 (मूल ट्रेन न 59124) जोबट - प्रतापनगर अनरिजर्व स्पेशल दिनांक 05 दिसंबर से जोबट से प्रतापनगर के लिए चलेगी। यह ट्रेन प्रति दिन 14.00 बजे जोबट से चलकर 18.05 बजे प्रतापगढ़ पहुंचेगी।

मार्ग में यह ट्रेन दोनों दिशाओं में डभोई जंक्शन, वधवाना, अमलपुर, संखेड़ा ,बहादुरपुर, छूँछापुरा, जोजवा, बोडेली, जाबूगाम, सुस्कल, पावी, तेजगढ़, पुनियावत, छोटा उदेपुर, पाडलिया रोड, मोटी सादली, अंबारी रिछावी, अलीराजपुर, खंडाला स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन के सभी कोच अनरिजर्व रहेंगे।

विधानसभा में तीसरी बार महिला प्रत्याशी ने रिकॉर्ड मतों से हासिल की जीत

माही की गूंज, आम्बुआ।

जोबट विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 192 में एक बार पुनः महिला प्रत्याशी ने जीत हासिल की है। यहां से कांग्रेस की उम्मीदवार श्रीमती सेना पटेल ने भारी मतों के अंतर से जीत हासिल की। जिसमें पार्टी कार्यकर्ताओं तथा मतदाताओं में हर्ष व्याप्त है। मगर अलीराजपुर में पार्टी प्रत्याशी तथा श्रीमती पटेल के देवर मुकेश पटेल के हार जाने से परिवार तथा पार्टी में मायूसी भी देखने को मिली है।

जोबट विधानसभा क्षेत्र में इस बार त्रिकोणीय मुकाबला हुआ। विधानसभा क्षेत्र 192 में कांग्रेस पार्टी की श्रीमती सेना महेश पटेल, भाजपा से विशाल रावत, निर्दलीय (भाजपा के बागी) पूर्व विधायक तथा वन विभाग निगम के अध्यक्ष मधौसिंह डावर, के बीच मुकाबला हुआ। हालांकि कांग्रेस से बागी सुरपाल अजनार ने भी हुंकार भरी थी मगर वह इतना असर नहीं दिखा सके। त्रिकोणी मुकाबले में कांग्रेस की श्रीमती सेना महेश पटेल ने अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा के विशाल रावत को लगभग 38 हजार 32 मतों के भारी अन्तर से हराया। श्रीमती सेना पटेल के पूर्व यहां से सुश्री कलावती भूरिया तथा कांग्रेस एवं कांग्रेस छोड़ भाजपा में गई श्रीमती सुलोचना रावत भी जीत चुकी है। इस तरह जोबट विधानसभा में तीसरी बार महिला प्रत्याशी ने जीत हासिल की है।

18 राउंड की मतगणना के अनुसार जोबट विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 192 में भाजपा के विशाल रावत को 42 हजार 22, श्रीमती सेना महेश पटेल को 80 हजार 784, मोहन सिंह निगवाल (नि.) 3 हजार 216, सुरपाल अजनार (नि.) 9 हजार 614 तथा रिंकू बाला डावर को 2 हजार 527 एवं दिलीप सिंह भूरिया (नि.) 1 हजार 737, माधोसिंह डावर ने 21 हजार 312 वोट के साथ ही 4 हजार 643 मत नोटा में गए। बताया जा रहा है, कांग्रेस प्रत्याशी की जीत पर कार्यकर्ताओं में भारी हर्ष व्याप्त है। श्रीमती सेना महेश पटेल ने विधानसभा क्षेत्र के समस्त कार्यकर्ताओं मतदाताओं का आभार व्यक्त किया है। जीत के बाद जोबट जाते समय आम्बुआ में पार्टी कार्यकर्ताओं ने आम्बुआ में मिठाई खिलाकर तथा आतिशबाजी कर भव्य स्वागत किया तथा रिकॉर्ड जीत पर बधाई दी।

20 करोड़ गबन मामले में फरार आरोपी ने फोड़े पटाखे, मास्टरमाइंड लेखपाल अब तक है फरार

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जिले के शिक्षा विभाग में 20 करोड़ रुपए का घोटाला सामने आया था। जिसके बाद अब इस मामले के आरोपी का पटाखा फोड़ते हुए सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हो रहा है। अलीराजपुर शिक्षा विभाग घोटाले में मास्टरमाइंड लेखपाल कमल राठौर इस वीडियो में पटाखा फोड़कर जश्न मनाते नजर आ रहा हैं।

सोशल मीडिया पर आरोपी लेखपाल कमल राठौर का वीडियो वायरल होते ही इस पर लोग चटकारे ले कर चर्चा कर रहे हैं। आरोपी अलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा खंड शिक्षा कार्यालय में अफसर और बाबू पर 20 करोड़ रुपए के गबन के मामले में एफआईआर दर्ज है। इस मामले के मास्टरमाइंड लेखपाल कमल राठौर के कई ठिकानों पर पुलिस अब तक दबिश दे चुकी है। मगर पुलिस के हाथ अब तक खाली है। वहीं इस आरोपी का पटाखे फोड़ कर खुशियां मनाते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने पर पुलिस पर सवालिया निशान खड़े हो रहे हैं।

विधानसभा चुनाव की धुंध छठी मौसम में धुंध कायम, कृषक परेशान रबी की फसलों पर कोहरे का असर

माही की गूंज, आम्बुआ।

अभी हाल ही में प्रदेश के विधानसभा के चुनाव संपन्न हुऐ है। जब तक परिणाम नहीं आए तब तक एक धुंध ही छाई रही जो की परिणाम के साथ ही छठ गए। मगर विगत दिनों से मौसम में छाई धुंध कब छंटेगी इसके कारण फसले खराब होने लगी है।

क्षेत्र में विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद धुंध छट गई। इधर विगत 26 नवंबर की दोपहर से क्षेत्र में बिगड़ा मौसम जिसमें दो दिनों की बरसात के बाद वर्षा तो थम गई मगर मौसम अभी तक साफ नहीं हुआ है। दिन भर आसमान पर बादल छाए रह रहे हैं सूरज की धूप नहीं निकलने के कारण तथा ठंडी हवा चलने के कारण कृषक परेशान हो रहे हैं। फसलों पर पाला पड़ने की आशंका व्यक्त की जा रही है। साथ ही तुअर (अरहर) पर पाला पढ़ने एवं गेहूं पर गेरुआ तथा चने पर इल्ली की समस्या आ सकती है। यदि कुछ दिन धूप और नहीं निकलती है तथा धुंध छाई रहती है तो फसलों पर कीटनाशक का खर्च कृषकों का बढ़ सकता है कृषक मौसम साफ होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

300 फीट बोरवेल में गिरी बच्ची, रेस्क्यू के बाद अस्पताल में हारी जिंदगी की जंग

माही की गूंज, राजगढ़ (ब्यावर)।

मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के ग्राम में 5 वर्ष की मासूम बच्ची मंगलवार शाम खेलते समय खुले बोरवेल में गिर गई। बच्ची बोरवेल के करीब 30 फिट पर जाकर अटक गई थी। 8 घंटे चले रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान रात करीब साढ़े 3 पर टीम ने बालिका को बाहर निकाला। इस दौरान बालिका बेहोशी की हालत में थी जिसे पचोर के अस्पताल में प्राथमिक उपचार के लिए ले जाया गया। लेकिन वहां से भोपाल के हमीदिया अस्पताल में रेफर कर दिया गया। काफी प्रयास के बाद भी बालिका बच नहीं सकी और उसकी मौत हो गई।

राजगढ़ जिले के नरसिंगढ़ तहसील के पिपल्या रसोड़ा गांव में मंगलवार शाम 5 वर्ष की बच्ची माही 300 फीट बोरबेल में खेलते समय गिर गई और करीब 30 फिट पर जाकर अटक गई। सूचना पर रेस्क्यू टीम के साथ पुलिस प्रशासन मौके पर पहुंचा और रस्सी डालकर बालिका को निकालने का प्रयास किया जा रहा था। देर रात तक चले प्रयास में बालिका को निकाल लिया गया। निकालने के दौरान बालिका बेहोशी की हालात में थी जिसे अस्पताल में प्राथमिक उपचार के लिए ले जाया गया। जहां से भोपाल रेफर कर दिया गया। यहां सुबह करीब 8 बजे उसकी मौत हो गई।

5 वर्ष की माही नाना इंदर सिंह ओर नानी रुक्मणी बाई के साथ खेत पर गई थी। इस दौरान खुला बोरवेल देखकर नानी ने हाथ पकड़ने का प्रयास किया। इस दौरान बालिका भागने लगी और खुले बोरवेल में जाकर गिर गई। रात 8 बजे भोपाल से एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और बच्ची को बचाने के प्रयास किए गए। सीसीटीवी कैमरा लगाए गए और ऑक्सीजन सप्लाई भी दी गई। चार जैसीबी के साथ पोकलेन की मदद से 60 फीट की दूरी से खुदाई की जा रही थी।

रेस्क्यू ऑपरेशन में शामिल एक अधिकारी ने बताया कि, प्रशासन के अधिकारियों के साथ 8 घंटे के करीब बालिका को निकाल लिया गया है। बालिका अपने पिता से बात कर रही थी। 25 फिट से ज्यादा टनल बनाया गया था। वर्टिकल ओर होरिजेंटल खुदाई की गई। पावर के लिए जनरेटर की व्यवस्था की गई थी। एनडीआरफ की टीम बोरवेल के होल तक पहुंची और बच्ची को सकुशल बाहर निकाल लिया गया था।

बस ने स्कूटी सवार को रौंदा, मौके पर मौत

माही की गूंज, जोबट।

रफ्तार का कहर थम नहीं रहा है तेज रफ्तार वाहनों के कारण आये दिन सड़क दुर्घटनाएं हो रही है। दुर्घटना में असमय लोगों की मौतें हो रही है। ताजा मामला जोबट का है जहां एक सड़क हादसे में स्कूटी सवार की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई है।

घटना जोबट थाना क्षेत्र के बेटवासा गांव की है। एक तेज रफ्तार बस ने स्कूटी सवार को रौंद दिया जिससे स्कूटी सवार की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं स्कूटी के परखच्चे उड़ गए। मृतक केसर सिंह स्कूटी से अपने घर लौट रहा था। यात्री बस धार जिले के बाग से जोबट आ रही थी। हादसे के बाद वहां पर लोगों की भीड़ लग गई। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। बस में सवार यात्रियों को दूसरे बस से गंतव्य की ओर भेजा गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने चालक को गिरफ्तार कर मामले को जांच में लिया है।

भाजपा नेता को मतगणना से 2 दिन पहले ही पता थे नतीजे- दिग्विजय सिंह

भोपाल। मध्य प्रदेश में बंपर सीटों के साथ भाजपा की जीत कांग्रेस नेताओं के गले सहजता से नहीं उतर रही है। कांग्रेस नेता लगातार ईवीएम में सेंधमारी की आशंकाएं जता रहे हैं। मध्य प्रदेश की बात करें तो ईवीएम पर हार का ठीकरा फोड़ने वाले नेताओं में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह कांग्रेस के प्रमुख चेहरे के रूप में सामने आए हैं। उन्होंने भाजपा की चुनावी जीत के पीछे ईवीएम हैकिंग का आरोप लगाया है। अब उनका एक्स पर एक पोस्ट सामने आया है जिसमें उन्होंने अपने आरोपों की मजबूती के पक्ष में दो स्क्रीनशॉट साझा किए हैं। दिग्विजय सिंह ने एक्स पर अपने पोस्ट में जो स्क्रीनशॉट साझा किए हैं उनमें से एक फेसबुक से जबकि दूसरा चुनाव आयोग की वेबसाइट के परिणाम का लगाया गया है। उन्होंने लिखा- इन दोनों तस्वीरों को ध्यान से देखिए। लाल बैकग्राउंड में भाजपा कार्यकर्ता लिख रहे हैं खाचरौद विधानसभा चुनाव में किसे कितने वोट गिरे और कौन कितने वोट से जीत रहा है। महत्वपूर्ण यह है कि यह पोस्ट मतगणना से 2 दिन पहले यानी 1 दिसंबर को ही लिख दी गई थी। अब इनका नतीजे के बाद की तस्वीर से मिलान कर लें...। मध्य प्रदेश की नागदा-खाचरौद सीट पर भाजपा के डॉ. तेजबहादुर सिंह चौहान ने कांग्रेस के दिलीप सिंह गुर्जर को 15,927 मतों से शिकस्त दी है। दिग्विजय सिंह ने जिस फेसबुक पोस्ट का उल्लेख किया है, वह अनिल छाजेड़ की प्रोफाइल से पोस्ट किया गया था, जो खुद को 'डिजिटल क्रिएटर' बताते हैं। अनिल छाजेड़ की प्रोफाइल के 5,000 से अधिक फॉलोअर्स हैं। प्रोफाइल में छाजेड़ की विजयी भाजपा उम्मीदवार के साथ और पार्टी की रैलियों में कई तस्वीरें हैं। छाजेड़ की प्रोफाइल में भाजपा का समर्थन करने वाले पोस्ट हैं।

"सिर मुंडाते ही ओले गिरे" कहावत हो रही कृषकों के साथ चरितार्थ

मामलाः मावठे से कपास की फसल खराब होने भाव और गिरने का

माही की गूंज, आम्बुआ।

खेती को मौसम का जुआ कहा जाता है, जिस तरह जुआ में खिलाड़ी हमेशा ही जीतता नहीं है वैसे ही खेती में हर बार लाभ मिले यह भी संभव नहीं है। मौसम कब करवट बदल दे और तैयार फसले खराब कर दे या पैदावार प्रभावित कर दे। फसल अच्छी हो जाए तथा मंडी में बिक कर रकम किसानों की तिजोरी में आ जाए तब कृषक को संतोष होता है वरना भाय बना ही रहता है।

उक्त स्थिति इस बार क्षेत्र में कृषकों के सामने आ गई है। खरीफ की फसल कपास लगभग खेतों में अपनी सफेदी बिखेर रही थी। कुछ कृषकों ने कपास की बिनाई कर ली तो कुछ यह कार्य कर रहे थे। इधर बाजार में कपास के भाव विगत वर्ष की तुलना में 15-20 रुपए किलो कम आ रहे थे जिस कारण कृषक कपास बेचने से कतरा रहे थे। विगत वर्ष 75-80 रुपए प्रति किलो थे जबकि इस वर्ष 60-65 रुपए किलो से बिक रहा था। इसी बीच 26 नवंबर तथा 27 नवंबर को मावठे की वर्षा होने से खेतों में तैयार खड़ी कपास की फसल भीग जाने के कारण खराब हो गई, अब कपास की बिनाई की जा रही है। यह कपास भीग जाने के कारण पीला पड़ गया जिससे भाव और कम हो गया है। यह कपास अब 50-60 रुपए किलो से भी कम भाव में बिक रहा है। व्यापारी भी खरीद कर सुखाने में लगे हैं जिस कारण सूखने के बाद वजन कम हो जाने से व्यापारियों को भी हानि हो रही है। कृषकों की स्थिति ÷सिर मुंडाते ओले पड़े÷ वाली हो रही है।

इनका कहना है

थोक क्रेता रामचंद्र माहेश्वरी ने बताया कि, मावठे के कारण कपास खराब हुआ पहले ही भाव कम थे अब पिला पड़ जाने के कारण और भाव कम हो रहे हैं।

बोरझाड़ कृषक ठाकुर लोकेंद्र सिंह राठौर ने बताया कि, खेती करना अब महंगा सौदा होता जा रहा है मौसमी परिवर्तन के कारण कृषकों की फसले खराब हो रही है। इस बार मवठे ने कपास की रंगत बिगाड़ दी पूर्व से भाव कम थे अब और कम होने से नुकसानी उठानी पड़ रही है।

ढेकालकुआं के सरपंच तथा कृषक विक्रम सिंह रावत ने बताया कि, महंगा खाद बीज और कीटनाशक के बाद कपास की फसल बहुत अच्छी आ रही थी मगर मावठे ने सब चौपट कर दिया कपास खराब हुआ और भाव भी काम मिल रहे हैं।

कांग्रेस जीती नहीं, भानु भीतरघात से निपटाए गए...

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसूरी

2023 का विधानसभा चुनाव संपन्न हो चुका है। सभी पार्टी व प्रत्याशी अपनी-अपनी हार व जीत का विशलेषण कर रहे है। हालांकि प्रदेश में भाजपा पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने जा रही है। जिले में सबसे महत्वपूर्ण माने जाने वाली झाबुआ विधानसभा में भी हार और जीत के विशलेषण हो रहे है। इन्ही विशलेषणों के आधार पर यह प्रतीत होता नजर आ रहा है कि, झाबुआ विधानसभा सीट से कांग्रेस जीती नहीं है बल्कि भाजपाई भीतरघातियों ने भानु भूरिया का सुर्यास्त किया है। हालांकि माही की गूंज ने यह बहुत पहले ही स्पष्ट कर दिया था। भानु भूरिया की जगह जिलाध्यक्ष पद पर कार्यवाहक अध्यक्ष की नियुक्ति ने यह स्पष्ट इशारे दे दिये थे और माही की गूंज ने भी यह स्पष्ट किया था कि, भाजपा के गुट विशेष से कार्यवाहक अध्यक्ष बनना भानु के लिए नुकसानदायक हो सकता है और हुआ भी यही। जिला मुख्यालय पर लुप लाईन में चल रहा भाजपा का यह धड़ा या गुट काफी समय से असंतुष्ट देखा जा रहा था। मगर जैसे ही भानु के नाम पर टिकट की घोषणा हुई वैस ही इस गुट ने अपनी मोहरें चलना शुरू कर दी थी। वजह भी साफ थी कि, अगर वापस भाजपा संगठन में सक्रिय भूमिका में आना है तो चालें चलना पड़ेगी और इस गुट ने किया भी यही। उद्देश्य सिर्फ इतना था कि, प्रदेश संगठन को यह जताया जा सके कि टिकट गलत व्यक्ति को दे दी गई है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए भानु का हारना बेहद जरूरी था। इसके लिए जिला मुख्यालय पर भाजपा के इस गुट विशेष ने वह सब किया जो जरूरी था। अब जबकि भानु यह चुनाव हार चुके है तो गुट विशेष की यह योजना सफल हो गई। क्या हुआ जो भाजपा ने अपनी एक महत्वपूर्ण सीट गवां दी। मगर यह अब तक स्पष्ट नहीं है कि, जिला मुख्यालय पर भाजपा के इस एक गुट विशेष को संगठन में अब कितनी तवज्जो मिलेगी।

झाबुआ विधानसभा में यह माना जा रहा था कि, मुकबला टक्कर का होगा लेकिन भाजपा के इस गुट विशेष ने चुनावी घोषणा होने के बाद से ऐसा माहौल बनाना शुरू कर दिया था कि यहां कांग्रेस की जीत पक्की है। इस विधानसभा में भानु के सामने दो बड़ी परीक्षाएं थी। एक तो कांग्रेस के कद्दावर नेता का पुत्र डॉ. विक्रांत भूरिया का प्रतिद्वदी होना और दूसरा भीतरघातियों से पार पाना। 3 दिसम्बर को आए परिणामों ने इस स्थिति को भी स्पष्ट रूप से सामने रख दिया। भानु भूरिया अपने चुनावी प्रतिद्वदी से तो काफी हद तक पार पा चुके थे, लेकिन भीतरघातियों ने भानु की किनारे लगती कस्ती में छेद कर दिया। जिसका नतीजा यह रहा कि भानु को विधानसभा चुनावों में यह दूसरी हार का सामना करना पड़ा। अगर भानु के साथ यह भीतरघात न हुआ होता तो परिणाम कुछ ओर ही होते।

झाबुआ विधानसभा में कांग्रेस की स्थिति भी चुनाव पहले ही स्पष्ट हो चुकी थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सभा के बाद माहौल बदल सा गया था। जिसका परिणाम यह रहा कि भानु की कस्ती किनारे लगते-लगते रह गई। जिस अंतराल से यहां हार-जीत हुई है वह कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं कहा जा सकता। हालांकि जिले में हमेशा ही कांग्रेस अच्छी स्थिति में रही है, लेकिन 2003 के बाद से इन स्थितियों मे परिवर्तन हो गया था और हर बार उलट फैर की स्थिति बनती दिखाई देने लगी। पवेसिंह पारगी, शांतिलाल बिलवाल जैसे सामान्य से चेहरों ने हवा का रूख पलट कर भाजपा की ओर कर दिया था। मगर जैसे-जैसे समय गुजरता रहा भाजपा के जिला संगठन में गुटबाजी हावी होने लगी। पहले जिला मुख्यालय पर भाजपा के प्रमुख दो गुट थे, तब भी स्थितियां यही थी कि दोनों एक दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहाते थे। इनमें से एक गुट अब रसातल में पहुंच गया तो दूसरा गुट अपने अस्तित्व की लड़ाई इस तरह लड़ रहा है कि मरता क्या न करता । फिर चाहे पार्टी को नुकसान ही क्यों न हो।

वैसे देखा जाए तो यह कोई पहला मौका नहीं है जब भाजपा के इस गुट ने इस तरह से कोई भीतरघात न किया हो। बताया जाता है कि, भाजपा का यह गुट जरूरत पड़ने पर कांतिलाल की गोद में जाकर बैठने से भी नहीं हिंचकिचाता। इसके कई सारे प्रमाण है, जब भाजपा का यह गुट कांतिलाल के लिए चरणम् गच्छामी होता दिखाई दिया है। खुद भाजपा के ही पदाधिकारी और कार्यकर्ता इस बात को भली-भांती जानते और समझते है, मगर विरोध नहीं कर पाते। यहां इस बात का अंदेशा भी है कि कहीं कांतिलाल ने अपने पुत्र को विधानसभा चुनाव जिताने के लिए कोई हड्डी फैंकी हो... ! क्योंकि ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है, पहले भी हो चुका है। कुल मिलाकर झाबुआ विधानसभा में कांग्रेस जीती नहीं, भाजपा हारी नहीं, मगर भानु भीतरघात से निपटा दिए गए।

सटीक रहा गूंज का विश्लेषण, आप और बाप ने बिगाड़े कांग्रेस-भाजपा के समीकरण

पेटलावद विकास खण्ड में कांग्रेस की बढ़त को रोक कर भाजपा ने किया जीत का सफर, 164 विधायको में मंत्री पद को लेकर जनता को उम्मीद

माही की गूंज, पेटलावद।
राकेश गेहलोत

विधानसभा चुनाव में पेटलावद विधानसभा क्षेत्र को लेकर गूंज का विश्लेषण सटीक रहा। चुनाव को लेकर गूंज की रिपोर्टिंग नतीजों के आसपास ही रही। चुनाव मैदान में पहली बार उतरी भारत आदिवासी पार्टी (बाप) और आम आदमी पार्टी (आप) ने कांग्रेस और भाजपा के समीकरण बिगाड़े जिसका पूर्व में आंकलन गूंज द्वारा किया गया था। पेटलावद विकास खण्ड में बाप ने कांग्रेस तो आप ने रामा में भाजपा को बढ़ा नुकसान किया। कांग्रेस को पेटलावद विकास खण्ड में पूर्व में 2018 चुनाव में मिली बढ़त को बनाये रखने की चुनौती ओर रामा में भाजपा को रोकने की चुनौती थी। कही न कही कांग्रेस इसी में चूक कर गई और पेटलावद विधानसभा में पूर्व के तरह बढ़त को नही ला पाने के चलते हार का सामना करना पड़ा। हालांकि कांग्रेस पेटलावद विकास खण्ड कड़ी चुनौती के बाद भी मामूली अंतर से जीतने में कामयाब रही तो रामा में भी भाजपा पर कुछ हद तक लगाम लगाई लेकिन जीत के जरूरी आंकड़े से दूर ही रही।

पेटलावद विकास खण्ड में बाप ने कांग्रेस का किया बडा नुकसान बना हार का कारण, आप ने भाजपा को दिया झटका

विधानसभा चुनाव के नतीजे अन्य दलों के प्रदर्शन पर पूरी तरह निर्भर हो गए थे और हुआ भी ऐसा ही। गूंज के दावे के अनुसार कांग्रेस पेटलावद से बढ़त बनाने में सफल रहेगी ऐसा कहा गया था, जो सही साबित हुआ। लेकिन बाप की वोट संख्या में कांग्रेस का आंकलन गलत साबित हुआ। कांग्रेस को पेटलावद विकास खण्ड से बाप की उपस्थिति के चलते दस हजार के लगभग बढ़त की उम्मीद् थी जो कि, पिछले चुनावों में 17 हजार के लगभग थी। कांग्रेस का मानना था कि, बाप का काफिला 7 से 8 हजार मतों पर सिमट जाएगा जो बढ़ कर 14 हजार के लगभग चला गया। उसी के चलते कांग्रेस की लीड पेटलावद विकास खण्ड से मात्र 14 सौ मतों पर अटक गई, वही कांग्रेस की हार का बड़ा कारण बना।

रामा विकास खण्ड में भाजपा को भी नुकसान उठाना पड़ा। जो आम आदमी पार्टी की उपस्थिति को कांग्रेस का नुकसान समझकर मैदान में उतरी थी, लेकिन गूंज के दावे के मुताबिक ही आप ने कांग्रेस नही भाजपा को नुकसान किया। पारा क्षेत्र के आप प्रत्याशी ने लगभग 5 हजार मत रामा विकास खण्ड से हासिल किए और भाजपा को 2018 में मिली 12 हजार मतो की बढ़त को इस बार 5 हजार के अंतर का नुकसान उठाना पड़ा। कांग्रेस को उम्मीद् थी कि, आप प्रत्याशी बाप की तरह रामा में भाजपा का बड़ा नुकसान करेगा लेकिन आप के मतों की संख्या पूरी विधानसभा में 8 हजार के अंदर ही सिमट गया। जहां पेटलावद विकास खण्ड में भाजपा ने कांग्रेस को लंबी लीड लेने से रोका वही कांग्रेस ने भी इस बार रामा विकास खण्ड में भाजपा की लीड को कम करने में कामयाबी हासिल की।

164 विधायको के बीच अटकेगा मंत्री पद, अजजा महिला होने का मिल सकता है लाभ

भाजपा को पूरे प्रदेश में बम्पर जीत मिली और 164 सीटो पर कब्जा किया। ज्यादातर एक्जिट पोल में भाजपा-कांग्रेस में कड़ा मुकाबला था लेकिन भाजपा को बड़ी जीत मिली। लेकिन मालवा की आदिवासी सीटो पर भाजपा को उम्मीद् के मुताबिक सफलता नही मिली। झाबुआ जिले की तीन सीटों में भी भाजपा को एक मात्र सफलता पेटलावद विधानसभा में मिली। अब भाजपा कार्यकर्ताओ ओर क्षेत्र की जनता को उम्मीद् है कि, इस बार मंत्री मण्डल में निर्मला भूरिया को मौका मिलेगा। लेकिन प्रदेश में कई बड़े दिग्ज्जो और ज्यादा सीटें जितने कारण कही न कही क्षेत्र को मंत्री मण्डल में निराश होना पड़ सकता है। मंत्री पद मिलने के लिए सबसे मजबूत पक्ष निर्मला भूरिया आदिवासी सीटो में एक मात्र महिला विधायक है। वही वरिष्ठ नेता दिलीपसिंह भूरिया की बेटी और लम्बे राजनीतिक अनुभव का लाभ मिल सकता है। लोकसभा चुनावों को देखते हुए हर जिले को साधने के प्रयास भाजपा में होना तय है। खास कर उन जिलों में जहा भाजपा का प्रदर्शन कमजोर रहा है।

अपने कर्मों से हारी भाजपा और अपने व्यवहार से चुनाव जीती कांग्रेस

माही की गूंज, काकनवानी। नरेश पंचाल

यह सत्य है की इस ग्रामीण क्षेत्र में आज तक भाजपा के नेता, विधायक और सांसद बनकर गए हैं, लेकिन वह कभी वापस पीछे मुड़कर इस क्षेत्र की जनता को मुडकर मुंह नहीं दिखाया। यही कारण रहा है कि, इस क्षेत्र के लोग भाजपा के नेताओं से अपनी आंखें मिलाना नहीं चाहते हैं और ना ही उन नेताओं का मुख देखना चाहते हैं। यही अंतर दूसरी ओर देखा जाए तो भले ही कांग्रेस के विधायक वीरसिंह भूरिया पिछले 10 वर्षों से अपने पद पर काबिल रहते हुए उन्होंने कोई ऐसा बड़ा कार्य नहीं किया लेकिन सहज ही अपने व्यवहार कुशल के कारण आज वह तीसरी बार विधायक चुने गए। यही अंतर भाजपा एवं कांग्रेस के नेताओं में देखा जा रहा है और देखा गया है।

अब चुनावी दौरा समाप्त हुआ रिजल्ट भी आ चुका है। कौन कितने वोट से हारा कौन कितने वोट से जीता सब कुछ पब्लिक के सामने है लेकिन नेता चुनाव होने के बाद अब समीक्षा में लगे हुए हैं कि, कहां से कितने वोट किसको मिले हैं और नहीं मिले तो क्यों नहीं मिले और मिले तो कैसे मिले है। इस समीक्षा से कोई हल तो नहीं निकलना है लेकिन कौन कितने पानी में रहा यह पता चल जाता है। किसने किसका साथ दिया और किसने किसके पीठ में छुरा घोपा है इसकी जानकारी जरूर हो जाती है। लेकिन समीक्षा के बाद हारने वाला और जीतने वाला यह नहीं देखते है कि, हमें किस वजह से हार मिली है और किस वजह से जीत मिली है। इन्हें तो सिर्फ अपने आने वाले परिणामों में सिर्फ और सिर्फ जीत और जीत ही दिखनी चाहिए।

2023 का विधानसभा चुनाव में झाबुआ जिले एंव अलीराजपुर जिले सहित पांचो सीटों पर भारतीय जनता पार्टी का दबदबा कायम रखने व परचम लहराये। जिसके लिए स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आम सभा की गई और मोदी ने गारंटी भी ली कि, इस बार फिर डबल इंजन की सरकार बनाएंगे। अब मोदी की गारंटी की गारंटी तो हो गई लेकिन अलीराजपुर जिले से एक सीट एवं झाबुआ जिले से एक सीट ही निकल पाई।

झाबुआ में थांदला विधानसभा की सीट पर कांग्रेस के पूर्व विधायक वीरसिंह भूरिया एक बार फिर से विधायक चुने गए लेकिन बहुत ही कम मतों से जीत हासिल कर पाए। इस विधानसभा क्षेत्र में भाजपा एवं कांग्रेस दोनों ही प्रमुख दल में कांटे की टक्कर रही। महज 1340 वोट से हार-जीत का फासला रहा।

इस क्षेत्र में शिवराज मामा का जादू तो चल गया और लाडली बहनों ने भी पुरजोर आशीर्वाद दिया। लेकिन यहां के भाजपा उम्मीद्वार कलसिंह भाबर का छोटे से लगाकर बड़े नेताओं तक ने फॉर्म भरने के पूर्व ही विरोध दर्ज करवा दिया था। फिर भी पार्टी ने भरोसा जताते हुए एक बार पुनः कलसिंह को मौका दिया लेकिन कार्यकर्ताओ की, हाई कमान ने एक न सुनी जिसका नतीजा यह रहा की भारतीय जनता पार्टी को थांदला विधानसभा सीट से हाथ धोना पड़ा ओर हार का मुंह देखना पड़ा।

क्या बागियों को दिखाएंगे बाहर का रास्ता

थांदला विधानसभा क्षेत्र में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही दलों में शुरुआती दौर में बागी खड़े हो चुके थे। लेकिन जैसे-तैसे कांग्रेस दल के नेताओं ने अपनी सहमति जताकर वीरसिंह भूरिया को ही दावेदारी के लिए खड़ा रखा। वहीं दूसरी और देखा जाए तो भाजपा के नेता भाजपा में रहते हुए ही भाजपा के कार्यकर्ताओं को कार्य करने से रोकते रहे। इतना ही नहीं कार्यकर्ताओं को डराते भी रहे और धमकाते भी रहे किसी भी कार्यकर्ताओं को पार्टी के प्रति समर्पित होकर पार्टी के प्रति कार्य नहीं करने दिया गया। भाजपा में पद पर रहते हुए कई नेताओं ने पार्टी के प्रति बेवफाई और गद्दारी की गई। क्या भाजपा हाई कमान विधानसभा सीट की हार की समीक्षा बैठककर पार्टी के बागियों को क्या बाहर का रास्ता दिखाएंगें।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने मनाई खुशी

भले ही थांदला विधानसभा क्षेत्र में भाजपा की करारी हार हुई। लेकिन प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने जा रही है, जिस खुशी में क्षेत्र के समस्त लोगों ने एवं लाडली बहनाओं ने मामा को भरपूर आशीर्वाद देकर खुशी का इजहार किया है एवं आतिशबाजी कर जय श्री राम के नारों के साथ एक बार पुनः भाजपा सरकार एक बार पुनः डबल इंजन की सरकार नरेंद्र मोदी जिंदाबाद के नारों के साथ आतिशबाजी की गई।

बांग्लादेशी डॉक्टर अजीत राय के यहां कार्यवाही, चार दिन बाद हुआ मामला दर्ज, दो

दिन में डर खत्म फिर फर्जी डॉक्टर ने खोले मौत के दवाखाने

माही की गूंज के समाचार की ही कार्यवाही के दौरान होती रही चर्चा

माही की गूंज, खवासा/भामल।

जिले में जिस तरह से शराब माफियाओं का बोल बाला है और जिस तरह से गांव -गांव और फलिये-फलिये में अवैध शराब की दुकानें संचालित हो रही है। ठीक उसी तरह लोगों की जान से खिलवाड़ करने हेतु इलाज के नाम पर गांव-गांव में कुकुरमुत्तो की तरह बांग्लादेशी व बंगाली मौत के दवाखाने खोलकर बैठ गए हैं। जिसकी पूरी जानकारी संबंधित विभाग, पुलिस एवं प्रशासन को है पर जिस तरह से दिन पर दिन अवैध शराब की दुकाने गांव-गांव में बढ़ रही है। उसी तरह यह मौत के दवाखाने भी बंद होने के बजाय गांव-गांव में बढ़ते ही जा रहे हैं और संबंधित विभाग सख्त कार्वाई कर उन्हें नस्तोनाबूद करने के बजाय छूट-पुट व अपनी टारगेट पूर्ति के साथ कार्यवाही कर संबंधित विभाग के नुमाइंदे मीडिया व अपने वरिष्ठ आला अधिकारियों के समक्ष अपनी वाहवाही लूटकर महज छुटपुट कार्यवाही के नाम पर ढकोसला किया जा रहा है जो सभी के समक्ष प्रत्यक्ष भी है।

एक मामले में दांत का इलाज फर्जी रूप से डॉक्टर अजीत राय द्वारा किए जाने पर एक मरीज का स्वास्थ्य बिगड़ गया। परिजन मरीज को बांग्लादेशी फर्जी डॉक्टर अजीत राय के क्लीनिक पर लेकर पहुंचे थे। जिसका समाचार 9 नवंबर 2023 के अंक में ÷फर्जी डॉक्टरों से निजात होकर मौत के घाट उतारने वाला सिलसिला कभी खत्म होगा या नहीं...? मामलाः फर्जी झोलाछाप अजीत राय डेंटिस्ट डॉक्टर बनकर कर रहा इलाज, शीर्षक के साथ प्रकाशित किया था। जिसमें खुलासा किया था कि, प्रशासनिक एवं विभाग द्वारा महज औपचारिक कार्रवाई के साथ इन्हें संरक्षण मिलता है। वहीं परिजनों के आरोपो के अनुसार बांग्लादेशी फर्जी डॉक्टर अजीत राय द्वारा फर्जी रूप से दातों का इलाज करने पर अजीत राय उपचार हेतु मरीज को रतलाम ले गया। लेकिन गुंज ने हमारे उक्त अंक में मरीज की बिगड़ी हुई स्थिति को देख उल्लेख किया था कि, मरीज का बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य में सुधार होता है या नहीं। वही कुंभकरण नींद में सोया स्वास्थ्य विभाग इस और कोई कार्रवाई करेगा या फिर लोगों की जान से खिलवाड़ करने वाले बांग्लादेशी डॉक्टर अजीत राय से साठ-गांठ कर पुनः ग्रामीणों का जानलेवा उपचार करने हेतु छूट दे दी जाएगी। बता दे कि, उक्त मरीज की मौत रतलाम में उपचार के दौरान उसी रात में हो गई थी, जो मामला भी अजीत राय ने अपने स्तर पर शांत कर दिया।

उक्त प्रकाशित समाचार व उसमें लगे आरोपों से बचने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने राजस्व विभाग व पुलिस का सहयोग लेकर 30 नवंबर गुरुवार को अजीत राय के क्लीनिक पर दबीश दी। स्वास्थ्य विभाग ने आसपास लोगों के बयान भी लिए, जिन्होंने बताया कि, डॉक्टर अजीत राय मरीजों को बोटल चढ़ाकर एलोपैथिक इलाज करता है व दातों का भी इलाज करता है। स्वास्थ्य विभाग को मौके पर मेडिकल व दातों का क्लीनिक होना भी सामने आया जिसमें अजीत राय की लड़की के नाम से मेडिकल व लड़के के नाम से दातों का क्लीनिक होना बताया। लेकिन मौके पर दोनों नहीं थे और मेडिकल के साथ दवाखाना खुला था। स्वास्थ्य विभाग ने पंचनामा बनाकर व सीसीटीवी कैमरे भी जप्त किए। उक्त कार्रवाई के दौरान स्वास्थ्य विभाग के साथ गए अधीनस्थ कर्मचारी या कोटवाल एवं रहवासी व राहगीर यही चर्चा करते नजर आए कि, माही की गूंज में प्रकाशित समाचार पर ही स्वास्थ्य विभाग कार्रवाई हेतु आया है। खैर, स्वास्थ्य विभाग ने मेडिकल व क्लीनिक पर सील लगा दी पर सहयोग के नाम पर एक छोटा दरवाजा खुला रखा, जहां से डॉक्टर अजीत राय घर में रहने के साथ मरीजों का इलाज भी करता रहा की बात सामने आई। मामले की जानकारी हमारे स्थानीय प्रतिनिधि द्वारा खवासा पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी से ली जा रही थी। नतीजन चार दिन बाद विभाग ने थांदला थाने में एक ही धारा में वह भी जमानती धारा में अपराध दर्ज करवाकर अपने कार्य की इतिश्री विभाग के संबंधित अधिकारी ने कर दी।

बांग्लादेशी फर्जी डाक्टर अजीत राय के यहा गुरूवार को प्रशासनिक कार्यवाही करते हुए।

दो दिन कार्यवाही के डर से दो दिन फर्जी क्लिनिक बंद रहे।

दो दिन के बाद फर्जी डाक्टरो का डर खत्म, फिर से खुले मौत के दवाखाने।

उक्त कार्रवाई के साथ दो-तीन दिन तक कार्रवाई के डर से अन्य खवासा सहित क्षेत्र के फर्जी दवाखाने बंद कर फर्जी डॉक्टर रफू चक्कर हो गए थे, परंतु वापस से मौत के दवाखाने खोलकर फर्जी डॉक्टर इलाज करने लग गए। नायब तहसीलदार पलकेश परमार ने बताया कि, हम लॉयन आर्डर के हिसाब से गये थे सारी कार्यवाही व जॉच स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी करेगें व वो ही मामला दर्ज करवायेगे। मामले में खवासा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर पदस्थ डॉक्टर निनामा ने जानकारी देते हुए बताया कि, मामला बीएमओ साहब द्वारा दर्ज किया जावेगा। साथ ही श्री निनामा ने बताया, क्षेत्र के सभी चिकित्सको को बुलाया है तथा उनके सभी दस्तावेज चेक किये जा रहे हैं, यह कौन सी पद्धति से इलाज कर सकते हैं और इन्होंने सीएचएमओ कार्यालय से अनुमति प्राप्त की है या नहीं जिसकी जांच भी कर रहे हैं।

थांदला बीएमओ भुवानसिंह डावर से जानकारी ली तो दो दिनों के बाद तक भी मामला दर्ज नहीं करवाया है कहा और चुनावी प्रक्रिया का हवाला देते रहे। मंगलवार को श्री डावर ने जानकारी दी कि, संबंधित के विरुद्ध मामले में एफआईआर दर्ज करवा दी है। किस धारा में अपराध दर्ज किया यह टीआई साहब ही बताएंगे।

थांदला टीआई राजकुमार कुंसारिया ने बताया, मामले में मध्यप्रदेश उपचार्य ग्रह तथा रजोपचार्य संबंधी स्थापनाये (पंजीकरण तथा अनुज्ञापन) अधिनियम 1973 संशोधित अधिनियम 2008 की धारा 3 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया, जो जमानती अपराध है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422